

**BHAGVET PURAN<sup>10</sup>**  
**10/401 G. K. U.**

7079

1. Title Bhāgavata Purāṇa, Daśam Skandha
2. Accession No. 5534
3. Folio No./Pages 28
4. Lines 13-14
5. Size 34 × 17 cm.
6. Substance Paper
7. Script Devanāgarī
8. Language Braja bhāṣa
9. Period Not mentioned
10. Beginning "श्री राम जी सहाय नमः ॥ श्री राधा वत्तद भोजयती ॥ अथ श्री मद् भागवत दशम स्कन्ध लिख्यते..."

11. Bind "आपनो इस्त्री रूप बनायके: ॥ अब श्री नंदराय जी के गोकुल में जातिभई ॥ 4 ॥"
12. Colophon Yes
13. Illustrations NO
14. Source Donation
15. Subject Purāṇa
16. Revisor NO
17. Author Not Known
18. Remarks In good Condition. bound.







1



2

ता.  
नि.  
दि.

सिद्धाकृतो जयति॥

॥ अथ श्रीमद्भागवतं द्वादशस्कंधलिखिते ॥

20

2290  
IV

005534



0055.34

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA



जा. ६. ५

अश्वत्थामाको बलशस्त्रतेजस्यो कोरवपावनकी संतापन कौंवीज यह जो मेरे अंग ता कृष्णकी शरणि आ  
ई मेरी माता तारा ताकी कुक्षिमें प्राप्ती कै है हाथमें चक्र बेल के रत्ना करी ॥ ४ ॥ हे विद्वान् सब प्राणीन कौं वाहर नीत  
र पुरुष काल रूप करि कै संसार कौं मोक्ष के दैने वारे ॥ कृपा करि कै मनुष्य रूप जीनने धर्यो ॥ ऐसे जो श्री कृष्ण  
तिन की लीला हमारे आगे कहो ॥ ७ ॥ और राम संकषण है सो तुम ने रोहिणी के उपन कहो ॥ और तीन ही कुंतु मेने

वीर्याणित स्यादित देह मा जामंतर्वाहिः पुरुष काल रूपैः प्रयच्छतो मृतं च मायामनुष्यस्य वदस्व  
विद्वन् ॥ ७ ॥ रोहिण्यास्तनयः प्रोक्ताराम संकषण एत्त्वयाः देवक्या गर्भसंबंधः कुतो देहांतरं विना ॥ ८ ॥  
कस्मान्मुकुंदो भगवान्पितुर्गहाधु जंगतः क्वा संज्ञातिभिः साधं कृतवान्मात्वं तापति ॥ ९ ॥ तजे  
वसन किं मकरो न्मधुपुण्या च केशवः ॥ त्रातरं च वधीत्कंशं मातुस्त्वाऽतदर्शनं ॥ १० ॥ देहं मानुष्यमा  
श्रित्य केति वधाणि क्वमिनिः ॥ मधुपुण्या महावात्सीत्यस्यः कल्पने वन्यो ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११

देवकी के पुत्र वताये ॥ सो ये क देह तैं दोन न के पुत्र कौं नये ॥ ८ ॥ मुक्ति के दैने वारे भगवान् पिता वसुदेव के घर में  
जमै कौं गये ॥ अत न के पति भगवान् ज्ञाति के न कुं शांगलै कै कहो यमे ॥ ९ ॥ और तजे के विषे वसि के भगवान् कहा  
करत नये ॥ मधुरा में वसि कै कहा कि यो ॥ मैया के मैया कंश कौं आपने हाथ नतै कै से माखो ॥ १० ॥ मनुष्य देह धरि कै  
मधुपुरी में जादवन सहित ॥ कीतने वर्ष ताई रहे ॥ श्री कृष्ण के कीतनी अत्मी नई ॥ हे नृगनंदन ज ॥ ११ ॥ ११

अरु हम नावरज ॥ राखवम मापत वाकी रखो होय ॥ सो सब श्री कृष्ण को चरित्र मेरे आगे कहो ॥ हे मुनि ज ॥ अ  
वादान जो मै ज ॥ ताके आगे विस्तार करि कै कहो ॥ १२ ॥ यह जो अति दुस है ॥ लुध्या सो मो कुं वाधान ही करै है ॥ तुं मारे सुख  
कमल तो गिखो जो ॥ हरिकथा रूपी भ्रमर ॥ ताकौं मै पी उऊं ॥ यातें त्यागण कीयो है ॥ जल प्राण जाने ॥ यातें मो कुं नृपया  
सवाधान ही करै है ॥ १३ ॥ तास में श्री मुक देव जी सर्व संसय के हरण वारे ॥ राजा कौं सरवचन सुनि कै ॥ राजा कौं दूजन क

एतद न्यच सर्वमे मुने कृष्ण विचेष्टितं ॥ वक्तुं महेसि सर्वं तत्प्रदधाना धविस्तृतं ॥ १२ ॥ नैषाति दुःसहं ह्य  
न्मात्पतो दमपि बाधते ॥ पितृ तं त्वन्मुखं नोज्युतं हरिकथाऽमृतं ॥ १३ ॥ स्तुत उवाच ॥ एवं निशम्य भ  
नंदन साधुवादे ॥ वैयासकिः सुभाषान् धविस्सुष्टतं ॥ प्रत्यर्च्य कृष्णं चरितं कलिकल्मषघ्नं व्याहृतं मा  
रभत भागवत प्रधानः ॥ १४ ॥ श्री मुक उवाच ॥ सम्प्राप्य वसिता बुधित्त वराजं विमलं ॥ वासुदेव क  
थायां ते यज्जातानै धि कीरति ॥ १५ ॥ वासुदेव कथा एव ॥ पुरुषास्त्री न्युनाति हि ॥ वक्तारं पृच्छ कश्चा  
त्तत्तत्पादसलीलयथा ॥ १६ ॥ भूमिर्दृष्टं नृपयाज देव्यानीक सतायुतैः ॥ आकांक्षाभरि भारेण ब्रह्माणा  
शरणं ययौ ॥ ७ ॥

रि कलियुग के मैलन कौं धोय वेवारी ॥ कृष्ण चरि त्रकौं प्रारंभ करत भये ॥ १४ ॥ हे राजस्वधिन मै प्रोष्टः  
तुं मारी बुद्धि नै भलो नी श्रो कीयो ॥ जा बुद्धि तैं तुं मारी कृष्ण कथा मै प्रीति भई है सो ॥ १५ ॥ वासुदेव की कथा कौं पृष्ठि वो ॥ तिन पुरु  
ष कौं पवित्र करै है ॥ वक्ता कौं पृच्छ न वारे कौं ॥ श्रोता कौं जैसे श्री गंगा जी मै ॥ प्रोहित यजमान जो कोई ग्रहण करै ताको ॥ गरवीले  
राजान कौं ॥ जिन के मिश ॥ ऐसे देसन की सेना न कौं ॥ सैकरान हजार न करि कै ॥ जो भारत सौ पीडित होय कौं ॥ जव पृथ्वी व  
हा की शरण जात भई ॥ ७ ॥



जा. द. पू. जब पृथ्वी गडकोट पधारिकै ॥ अक्रपात कौ वहावत ॥ कहला जासै उपजै ॥ असें प्रकरत ॥ बंसा के पास जाय आपनो ॥ तब शंख  
 एक है ति भई ॥ १५ ॥ बंसा जी जा पृथ्वी कौ ॥ तब मुनिकै ॥ देवतान कौ संगलै कौ ॥ पृथ्वी कौ संगलै कौ ॥ शिवी जी कौ संगलै कौ ॥  
 हीरस मुद्र के विषै जात भये ॥ १५ ॥ जा हीरस मुद्र के निकट जाय कौ ॥ जगत के नाथ देवतान के देव ॥ सब मनोरथ पूर्ण क  
 रने वारे ॥ असें भगवान नारायण ॥ तिन की शहस सीधा करिकै स्तुतिकरी ॥ २० ॥ समाधि लगाई तामै ॥ आकाश वांनी नई ता

जो भस्वा ॥ अमुखी न्नाह दंती करणं विभो ॥ उपस्थितांतिकेतस्मै ध्वसनं च मनो चत ॥ २० ॥ ब्रह्मात  
 उपधार्या धर्म सह देवैस्तथा सह ॥ जगाम स त्रिजय न स्तीरं स्तीर पयोनिधे ॥ २१ ॥ तत्र गत्वा गजनाथ  
 देव देवं ह ध्या कथि ॥ पुरुषं पुरुषं स्तुते न उपतस्ये समाहितः ॥ २० ॥ गिरं समाधौ गगने समीरितां नि सम  
 वेधास्त्रिदशानुवाच ॥ गां पौरुषी मेष्टु एता मयः पुनर्विधायता माश्रुत येवमाचिरं ॥ २१ ॥ पुरैव प्रसां वध  
 तो धराज्वरो नवमिरं शर्यं दुष्ट पजन्यतां ॥ सयावद्व्यामरसीश्वरेश्वरः स्वकालशक्त्या क्षिपयन् श्वरेभ्यः

वांनी कौ मुनिकै ॥ बंसा जी देवतान तै बोले ॥ हे देवता ॥ हो ॥ मोकुं ईश्वर की आता भई है ॥ ता कौ तुं ममुनौ  
 मुनिकै वैठि मतिरहौ ॥ शि धही वैशै रकरो ॥ २१ ॥ हमारी प्रार्थना तै पहलै ही ॥ ईश्वर नैया पृथ्वी कौ उत उरि करनो विचा  
 ल्यो है ॥ सो तुं म आपने असन करिकै ॥ अय जा दवन मै जाय कैं जन्म धारण करौ ॥ कवताई ॥ जवताई बंसा दिक  
 न के ईश्वर ॥ आपनी काल शक्ति करिकै पृथ्वी को भा उतारैगे ॥ और पृथ्वी मे वी चरैगे ॥ जवताई तुं म पृथ्वी मे रहौ ॥ २२

पर पुरुष भगवान् ॥ साक्षात् ॥ आयक प्रघट होयग ॥ तिन के शग विहार करिवे केलिये ॥ देवतान की ईस्वी तेह  
 जमै आयकै जन्म धारन करौ ॥ २३ ॥ हजार जीन के मुख ॥ वासुदेव की कला ॥ असें सें सजी श्री कृष्ण के शंग की डोक  
 रि वे केलिये ॥ ज सो धा ॥ हर्ष ही प्रघट होयगे ॥ २४ ॥ पाछे आपनी माया कौ ॥ संखण जगत कौ कराय वारी ॥ ताकुं अज्ञा हो  
 तव देव की को गन धे चिरे केलिये ॥ ज सो धा के मोह करिवे केलिये ॥ य सो धा के माया प्रघट होयगी ॥ २५ ॥ प्रजापति न

वसुदेव ग्रहं साक्षात् भगवान् पुरुषः परः ॥ जनिष्यते तत्पुत्रा धर्मं संभवन्तु मुरखिय ॥ २३ ॥ वसुदेव  
 कलानंतः सहस्रवदनः त्वराट् ॥ अग्रतो भविता देवो हरेः प्रियचिकीर्षया ॥ २४ ॥ विष्णोर्माया भवती  
 यया संमोहितं जगत् ॥ आदिष्टो प्रभुणा शनकाया धर्मं न विष्यति ॥ २५ ॥ श्री प्रकट वाच ॥ इत्यादि  
 श्याम रंग एव प्रजापति विविभुः ॥ आश्वत्थ च महर्षिर्गर्भिः स्वधाम परमं ययौ ॥ २६ ॥ सरसेना य उपति  
 मंथुरा मो वसन्तरी ॥ मथुरा नृश्वर सेना श्व विषमान बुभुजे पुरा ॥ २७ ॥ तस्या तु कहि चिच्छोरि वसुदेवः कृतो  
 बहः ॥ देवक्या सूर्य या मार्धं प्रधाणेरथ माह हत ॥ २८ ॥

के पति बंसा जी या प्रकार करिकै ॥ देवतान के गणन कौ अज्ञा करिकै ॥ वचन तै पृथ्वी कौ समाधान करिकै ॥ सत्य लोक कौ  
 जात भये ॥ २४ ॥ जा दवन के राजा सरसेन ॥ मथुरा पुरी मे वास करत ॥ सरसेन देश कौ राज करत भयो ॥ २५ ॥ शं पूर्ण आद  
 व ॥ जे पृथ्वी के नो ग करनः वारे ॥ तिन की श्री मथुरा पुरी राजधानी होति भई ॥ जामथुरा जी मै ॥ भावान् नित्य विराजमान  
 है ॥ २६ ॥ ताई मथुरा विषै ॥ एक श मे सरसेन के पुत्र ॥ वसुदेव जी विवाह करिकै ॥ नव डल हनी देव की कौ संगलै कौ ॥ रथ पै च

उत्तमये

२५



ना. ६. ४. सकलरथसुवर्ण के मटे सोज के संगः ॥ ऐसे जो उग्र सैन कौं प्रकंशः ॥ वैहै निके प्यार करि वे कै लिये ॥ रथ के घोराण की बाग डोरि कौं  
पकरि कैं ॥ रथ हों कि वे कौं दौड़ गयोः ॥ ३० ॥ आपनी कं न्यापे वडो है प्यार ज कौं ॥ ऐसे जो देव क जानै ॥ विहा की वेरः ॥ सोवर्ण की मा  
ला जीन कैं ॥ ऐसे चारी मै हाथी दायजे मैरीये ॥ पंद्रह हजार घोरा दीये ॥ अरि सै रथ दीये ॥ सुकु मारोतिन के अंग ॥ ऐसे सौ सैं  
हासी प्रंगार करि कैं देत भये ॥ ३१ ॥ चलती वार वर वध के मंगल के लिये ॥ शंख नेरि नगारे ॥ और सब वाजे एक संग ही वा

उग्र सेन सुतः कंशः ॥ प्रियचिकी धेया ॥ रस्मीन हयानां जग्राह रौक्मै रथ शतै र्वतः ॥ ३० ॥ चतुः शत पारि  
वर्ह गजानां हेममालिनां ॥ अश्वानां सयुतं सार्धं रथानां च त्रिषु शतं ॥ ३१ ॥ हासीनां सुकु मीनां द्वे स  
ते समत्नं कृते ॥ इति त्रै देवः प्रहृष्टा नो इति नृवत्सलः ॥ ३२ ॥ संवत्सरे मरु देगा प्रु ते डु डु डु भयः सम ॥  
प्रयाण प्रकृ मे ताव दूर वधोः सुमंगलं ॥ ३३ ॥ पथि प्रगृही णं कंश मा भो ध्या हा मरी रवा क ॥ स्वप्नात्त्वाम  
मम मो ग भो हे ता या व ह से व ध ॥ ३४ ॥ इत्युक्तः सखिलः पापो भोजानां कुल पासन ॥ भगिनी हंतु मार व  
ः खड्ग पाणिः के च गृहीत् ॥ ३५ ॥

जता भये ॥ ३३ ॥ मार्ग कै विषे धो ज न  
शवांनी संवो धन दै कै बोली ॥ अरे मरिष जा कौं तपो हो चाय वे कौं जा भई ॥ सो पही देव की तेरी व है नि ॥ ता के गर्भ कौं अवतं पर  
क्रम सुनि ॥ या कौं आ वो वालिक तो कौं मारै गो ॥ ३४ ॥ ऐसे आकाश वांनी के कहै त ही ॥ इष्ट पापी भोज वंशीन के कुल कौं कल  
कत्त गा व न हारो ॥ जो कंश तानै ॥ तव ही ॥ वाव है निके मारि वे कौं हाथ मै खड्ग ले कै ॥ वडो क्रोध वंत कै कै ॥ आपनी वैहै निकी चुटि मा पक  
र तो भयो ॥ ३५ ॥

निंदित है कर्म जा कौं ॥ ऐसे जो कूर निरुत्त ज जो कंशः ॥ ता कुं वड जागी ॥ वसु देव जी समुद्र वत भये ॥ ३६ ॥ अहो कंश ती  
हा गुण न की ॥ वडे वड सर वीर वडा दे करे है ॥ नो ज वंशीन के जस के करन वारे ॥ तुम वी वाह मरी की व धाई मै ॥ यह कौं  
कहा करी हो ॥ एक तो यह अस्त्री जाती ॥ इस रै ती हारी व है नि ॥ ताहि कै शो मारो गो ॥ ३७ ॥ और जो मत्स्य के डर ते मारो हो तो  
मत्स्य तो जन्म धारी स व न कु है ॥ जादि ना यह जीव ज न है ॥ ता ही दी ना या देह के संग मत्स्य ज न है ॥ आज ते तथा मा

तं जगु स्थित कर्माणं नृसं स निरय त्रयं ॥ वसु देवो महा भाग उवाच परि सत्त्व यत् ॥ ३८ ॥ वसु देव उवाचः  
प्ला घनी य गुण मरै न वान भोज य श करः ॥ सक धं भा नी ह न्या त स्त्रिय मु दार प वणि ॥ ३९ ॥ मत्स्य जन्म  
वतां वीर दे हे न सह जाय ते ॥ अथ वा द श तां ते वा मत्स्य वै प्राणि ना ध्रु वः ॥ ४० ॥ देह पंच त्व मा प न्ने दे ही क र्मा नु  
गो व स ॥ दे हां तर म नु प्रा प्य प्रा क त नं त्य ज ते व ॥ ४१ ॥ वृजं स्ति धु न् प दै के न म ये वै के न ग च्छ ति ॥ यथा  
तृ ण ज लो के व दे ही क र्म ग ति ग तः ॥ ४२ ॥

वर्ष ते पी छै मरै ॥ या जीव कौं मरि वो ही नी श्रे क ह्यो है ॥ और या देह कौं पाय कैं ॥ या दे ही कौं ज व छो डै है ॥ तव विव स जो जीवै ॥ सो यह  
आपने कर्म न के व सः है ॥ ज व या दे ही कौं मत्स्य म मो आ व है ॥ ४३ ॥ जैसे चलती वेर पुत प्र प है लैं ॥ आ गिले पाव को धरिले है ॥ तव पी  
छी ले कौं उठवै है ॥ तैसे ई हरि गी डर ॥ वाती नु का कौं प करि ले ॥ तव पी छी ले ती नु का कौं छो डि दे है ॥ कष्टु घ वरी वा कु परै न ही  
क्यो ती नु का कौं प करि रहि है ॥ ऐसे ई यह जीव कर्म न के व स है ॥ पहलै और देह प्रा कुं व नि जाय ॥ ता पी छे वा देह कौं छो डि है ॥ ४० ॥



ना. ६४. सुपनेमें जैसें पुरुष देव सुनै। संसकार के वस मन है। ताको चिंत बनत। जात पद। **जैसें सपनेमें देह को न जानै।**  
 देव। फिर वा सुपन की देह में ऊं रज्जु में ऊं। ऐसें अभिमान बांधिले। जैसें सपनेमें देह को न जानै।  
 सें ई मनोरथ करत करत। वा देह को भूलिकै। और देह में अभिमान बांधिले है। **४४॥** **जैसें सपनेमें देह को न जानै।**  
 ने प्रेरो। विकार को न स्यो। जो वन माया के रचे। पंच भूत न के है। तिन में जा जा देह में रोइ मन। जाहि देह

स्वप्ने यथापस्यती देह मी दृशं मनोरथेनाभिनिविष्टचेतन॥ दृष्टकृताभ्यां मनसा तु चिंतयन् प्रप  
 द्यते तत्किमपि स्य पस्मृतिः॥ ४१॥ यतो यतो धावती देव चोदितं मनो विकारमकमाप पंचतु॥ एते पुन  
 धारचितेषु देहसोपपद्यमानः सहते न जायते॥ ४२॥ ज्योतिर्यथैवोदकपार्थिवेष्वदः समीर्यमान  
 गतं विभाव्यते॥ एवं स्वमाधारचित्तस्य सोपमानगुणेषु रागानुगतं विमुच्यति॥ ४३॥ ॥ ४३॥

मै अभिमान बांधिले है। वाही देह में यह जीव मन कुं संग लेकै जन्म है। ४२॥ जैसें सूर्य चंद्रमा दैक न की जोति  
 जल के न रे पात्र में जो जल है। तामें प्रतिबिंब सी होय कैं। पवन के वेग ते जल हलै। जामें कें पित सी प्रतीत होय है।  
 सी। आप नी अविद्या तै वनै है। देह तिन में। अभिमान बांधिले है। तव आप को सुधड़ः खमानै है॥ ४३॥

ह ताकारण तता आप नाम ला चाह। असा पुरुष का कृत। विरभाव का कृत न करे। वा कुं दुसरे ते भय होय है॥ ४४॥ जातेय  
 ह तेरी छोटि वहे निहै। बालिक है। कृपण है। काष्ट की प्रीति तरी की सी नाई। तेरे आगो घडी है। तुं मतो दीन न मै वडे  
 हतकारी हो। यामें गलत पीनी क्यो मारो हो। मारी विलाय क नही है॥ ४५॥ हे कुरुवंशी राजा परिहृत। ऐसें धारे वच  
 न कहिके वसुदेव जीने समर्प्यो। तो वी। एक तो आप ही दुष्ट। दुसरे दुष्टता। अपुरन को संजा। जाते वचन मान्यो

तास्मान्न कस्यचिद्रोहमाचरेत्तत्तथा धाविधः॥ आत्मनः स्तेममन्विच्छन् प्रो ग्धुर्वपरतो भयं॥ ४४॥  
 एषा तवानुजावाला कृपाणा पुत्रिकोपमः॥ हेतुना हंसिकत्वाणि मिमांस्व दीनवत्सत्नः॥ ४५॥ श्री  
 प्रक उवाच॥ एवं स समाभिर्भेदैर्वाधप्रमानोपि दाहण॥ न न्यवर्तत कौरव्यपुरुषादाननुव्रतः॥ ४६॥  
 निर्वंधे तस्य तं स्नात्वा विचिंत्यान कंडुभिः॥ प्राप कलं प्रतिवापु मिदं तत्रान्वपद्यतं॥ ४७॥ म  
 त्युर्बोधिता पोषोधाव दुष्टिवत्नोदयं॥ यद्यसौ न निवर्तत नापराधोस्ति देहिन॥ ४८॥ प्रादाय  
 मृत्युवे पुत्रान्मोचयेत्कृपणामिमां॥ सुता मयदि जायेरन्मृत्युर्वा नम्रियेत चेत्॥ ४९॥

नही॥ ४४॥ तव वसुदेव जी ता कं श कौ ह जानिकै। विचार करिके देव की की प्राप्ती भई जो मृत्यु ताहि दुरिकरि  
 व कै लिये। जामें यह विचार करतो भयो॥ ४५॥ तव ताई बुद्धि को बल चलै। तव ताई मृत्यु को दुरिकरे। और  
 मृत्यु दुरि न होय तो वा कौ रोष नही॥ ४६॥ मृत्यु रूप जो कं श। ताको पुत्र दैने कहिके। या कृपण देव की के प्राण व  
 चाऊ। और पुत्र दैके देव की के प्राण व चाये। यह तो नित नही है॥ ४९॥



ना. ४. ५. तहांवमुदेवजी कहै है॥ जव पादेवकी कै मेरे पुत्र होयगो॥ जव जो हो नहार होगी सो कहै हैगी॥ जव तार्ति तो याके प्रा  
णवचैगे॥ लरिकानयेतै॥ पहिले॥ नाव॥ यह कंश ही मरि जाय॥ कछु अनीती नही है॥ जो मेरे लरिका होय तो ता  
ई॥ कंश नही मरै तो॥ मेरो ही पुत्र या कंश को मरै॥ ऐसे उलटी बात तो न हो जाय॥ परनु नु मारे लरिका वालिक  
या तस्मा कंश को कैसे मारैगे॥ तहांवमुदेवजी कहै है॥ विधाता की गति का रूपै जानिवे मैं आवे नही॥ जे पुह  
धमरि वे लाय कहै॥ ते तो नही मरै॥ ते मरि वे लायक नही॥ तिनकी मत्त हो जाय॥ ५॥ जैसे अग्निकाष्ठ मै वियोग

विपर्ययो वा किं न स्या कृतिर्धातुर्दिरत्यया॥ उपस्थितो निवृत्ते त निवृत्तः पुनरापतेत्॥ ५०॥ अग्रे यथादा  
रुविमोगयोगयोरदृष्टतो न्यन्त निमित्तमस्ति॥ एवं हि जंतोरपि दुर्विभावः क्षरीरसंयोगा वियोगहे  
तुः॥ ५१॥ श्रीमुक उवाच॥ एवं विमृश्य तपापं यावदात्मनि दर्शनं॥ पूजयामास वै शौरिर्वकुमा  
नपुरःसरं॥ ५२॥ प्रसवदत्ता भोजो न संसतिरपत्रपं॥ मनसा ह्यमानेन प्रहसन्ति रमवती॥ ५३॥

योगको॥ अदृष्टविना॥ और कारन नही है॥ जैसे वन मै अग्निलगै है॥ जे जर नहार नही है ते पास के वचि जाय है॥ औ  
र ते जर नहार होय है ते उरि के जरि जाय है॥ नाम मै पास के जरै नही॥ उरि के जाय जरै॥ हे॥ ऐसे ई प्राणी न के जन्म म  
रुको कारण है॥ ५१॥ जहां ताई आपनी बुद्धि चले॥ तहां ताई या प्रकार विचार करि कै॥ वमुदेवजी ने कंश को पूजन की  
या॥ कंश के प्रसन्न करि के लिये॥ उपर ते वडो प्रफुल्लित है॥ मुख कमल जीन को॥ ऐसे वमुदेवजी॥ कूर॥ निल  
जके पाजे॥ ५३॥

हे॥ सौम्यः जैसे आकाशवांनी ने कही ते से॥ निश्चै॥ या ते तुंम कुंभय नही॥ जिन पुत्र एते॥ तुंम कुंभय भयो है॥ जे या के पु  
त्र लाय कै॥ तुंमै अर्पण करि उगो॥ ५४॥ वमुदेवजी के वचन न को सांचो मानि कै॥ वाव है निके मारि वे ते निवृत्त भ  
यो॥ तव वमुदेव कुंभसन्न भये॥ कंश की वडाई करि कै॥ आपने घर स्थान को जात भयो॥ ५५॥ सब के आत्मा भगवा  
न॥ जिन के देवता॥ औसी जो देवकी॥ सो जव॥ समयो आयो॥ तव वर्ष वर्ष मै एक एक पुत्र भयो॥ ऐसे आठ पुत्र एक कं

वमुदेव उवाच॥ न ह्यस्यास्ते भयं सौम्य यद्वै त्वाहा क्षरीरवाक्॥ पुत्रान् समर्पयिष्ये स्या यतस्ये भय  
मायनं॥ ५६॥ श्रीमुक उवाच॥ श्वसुर्वधा निववृत्ते कंमस्तदा क्यसारवित॥ वमुदेवो पितृप्रीतः प्रसन्न  
प्राविशद्गृहं॥ ५७॥ अथ काल उपावृत्ते देवकी सुवदेवता॥ पुत्रान् प्रमुमुवे चाधौ कंन्या चैवानुवत्सरा॥ ५८॥  
कीर्तिमानं प्रथमजं कंशयानक इंडुभि॥ अथ या मास कृष्णि एसानता दिति विकलः॥ ५९॥ किंदुः स  
हं नु साधनां विदूषां किंमपेक्षितं॥ ६०॥

न्याहोति भई॥ नववालि कउ पजाये॥ ५६॥ हे राजन॥ पहलै तो की  
र्तिमान पुत्र भयो॥ ता कुं वमुदेव जी वडे कष्ट है॥ कंश के पास लै जात भये॥ क्यौं क फुठवो लिवे ते डरपै है॥ जाते लेग  
ये॥ ५७॥ कंश मगावतै॥ वमुदेव जी आपही कै से लै जाते॥ तहां कहै है॥ साधु जे है ते को न सी बात सहारी सकै नही॥  
और पुत्र को लडाय वे को सुख॥ वमुदेव जी पै कै शौखो जोगायो॥ तहां कहै है॥ विधान पुरुष न को को न सी बात अपेक्षि  
त है॥ कोई कहै॥ जालिये ते गयो होयगो॥ जो मै पहलै लै जाउ गो तो कंश मारै गो नही॥ ६०॥ ॥ ६१॥ ॥ ६२॥



तहां कहै है: दुष्ट कहौ नही करै है: कंशसारिके दुष्ट कौ दया कव आवै है: वसुदेवजी तो लरिका कौ लेंगे: परंतु देवकी  
 पै के सेंदी योग्यो: जास मै कहै है: असे लरिका तो मै रेंवो होत होयो: मेरो तो लरिका एक श्री कर्म है: सो यह जानि  
 के दैती नई: ५५: जब वसुदेवजी की समता देखि कै: और मन्चाई देखि कै: हे: संतुष्ट जा कौ मन: असे जो कं  
 ५७: ५८: सो मुसक्याय के यह बोले: मालरिका कौ फेरि लै जायें: या तो मो कं भय नही है: तिसारे आठवे वालिक ते  
 मेरी मत्पूरची है: ६०: तथास्तु: असे कहि: लरिका कूले के वसुदेवजी आपते भये: परंतु कंश के वचन कौ विषवा

किस कार्य कदर्यो एण दुस्त्यजं किं धृतात्मनां: ५८: दृष्ट्वा समत्त्वतं च्छरे: सत्ये च वयस्य स्थिति: कं  
 सस्तुष्टमना राजन् प्रहसन्निदमब्रवीत्: ५९: कंश उवाच: प्रतियातुकु मारयं न ह्यस्मादस्ति मे  
 भयं: अष्टमाधुवयोगो भो न्मत्पुर्मे विहित: किल: ६०: तद्येति सतमादाय यथावानकडं डभि: ना  
 भ्यनदत्ततदाव्यमसते विजितात्मन: ६१: नंदाद्यायेव जे गोपायाश्चासीधं च यो धित: तस्मया वसु  
 देवाद्या देवक्याद्याय डस्त्रिय: ६२: सनही कत्यो: अवतो यानै फेरि दीयो है: फेरि चाहै तो माग्य लेय: असा  
 धु है: या के मन कौ ठिकानो नही: ६३: जब कंश ने लरिका का दायरीयो: तब नारदजी ने आप के कंश ते यह बात क  
 ही: व्रज में: यानंद जी ते आदिलै कै: जे गोप है: और गोपन की अखी है: और वसुदेवजी ते आदिलै कै: जो जादव है: देव  
 की ते आदिलै कै: सब जादवन की अखी है: और जो सब धन की जाति के है जादो: ६४:

वसुदेव दयालनत आदिलै कै: और जो काठ जादव तो हारे पास मै रहै है: हे कंश ये सवरे: ६५: वसुदेव: नंद के कुल  
 मै देवता प्रघट भये है: याष्ट्वी के उपर देव न कौ दोष बजो है: ता के लिये भगवान् ने उपाय रच्यो है: ६६: इतनी  
 कहि कै नारदजी तो जात भये: जब कंश ने जादवन कौ देवता मानि कै: देवकी के गर्भ ते प्रघट होय के: विस्मृतो  
 कुं तारेंगे: ६७: जब यह मानि कै: देवकी के: और वसुदेव कौ संग लै कै: एक घर मै रोकि कै: पावन मै बेरी डारि कै:

सर्वे देवता प्राया उन्नयोपि भारत: ६८: सात गोबंधुसुहो ये च कंश मनुवता: ६९: एतत्कंसाय भगवा  
 न्शरांसाभ्येत्य नादद: ७०: भूमेर्भारथमाणनं देत्यानां च वधोद्यम: ७१: ऋषे विनिर्गमे कं सो यद्  
 न्मत्त्वा सुरा निति: ७२: देवक्या गर्भे संभूतं विजुचं स्ववधं प्रति: ७३: देवकी वसुदेव च निगृह्यानिगडैर्ग  
 है: ७४: जातं जात महं भुवने यो रजन संकथा: ७५: मातरं पितरं ब्राह्मन् सर्वंश्च सुहृदस्तथा: ७६: प्रति  
 ह्यसुहृदो लब्धारा जान: प्रायसो भुवि: ७७: आत्म गमिह संजाते जान न प्राप्तिवत्सना हतं: महा  
 सुरं कालनेमिं यडभि: सम हं धत: ७८:

॥ जो जो धन कै लरिका भये: तिन कुं नगवान की संका करि कै मा  
 रत भयो: ७९: आपने प्राणन कै लोनी राज एष्ट्वी मै: माता पिता मै या सुहृद न कुं नगवान की संका करि कै: दुष्ट  
 दैत भयो: ८०: या संसार मै पहलै जन्म मै कालनेमी वडो असुर भयो है: वा ऊं कूं पहलै विस्मने मा ल्यो है: यह वा  
 त जानि कै: जादवन ते वैर ना करत भयो: ८१:



ना. द. छ. हे. यडवंशी भोजवंसी न के राजा. **अैसे आपने पिता उगु से न तिन के पावन मै वेरी डारी के. ऐसे वो डो वलवान**  
**कंश. आप ही सर से न को भोग करत भयो. ॥ ६५ ॥ इति श्री दस प्रथमो ध्यायः ॥ १ ॥ पलंग मुरा. व का मुरा. चो**  
**एरा. त एण वर्त. च घा मुरा. मुखिक. द्विविद वंदरा. हृत्तना के शि. धेनु का मुरा. ॥ १० ॥ और अमुर न के राजा**  
**वाना मुरा को संग ले के. जरा सिंधु मुरा के वलन के. ऐसे जो वली कंश ने. यादवन के हृत्तदीया. कंश ते उः**  
**खित के के. और दे सत मै जात भयो. एक अमुरादिक जादवः. अज्ञाकारी के के. कंश की डहेल मै लगि पवत्यो.**

उगु से न च पितरं यडु भोजां धका धिपं. स्वयं निगल्य बुभुजे सर से नान्म हावल. **॥ ६५ ॥ इति श्री मा**  
**वते महा पुराणे दशमे प्रथमो ध्यायः ॥ १ ॥ श्री मुक उवाचः. पलंग वक चानर त एण वर्त महा शनैः**  
**मुखिकारिषु द्विविदस्तना के सिधेनु के. ॥ १ ॥ अन्ये ध्या मुरा भ पाले वा ए नौ मादि भियुत. ॥ यडु ना**  
**क. रनं च के वली भाग ध संस्त्रय. ॥ २ ॥ ते पिडितानि विविधः. कुरु पांचाल के कथात. शल्वान वि**  
**देहान को शलान पि. ॥ ३ ॥ एके तम नुरु धाना ज्ञात यः पर्यु पासते. हते सुप्रट सुवाले सुदेव कथा औग**  
**सेनिना. ॥ ४ ॥ सधु मो वै सव धा मय मनं तं प्रचक्षते. गर्भो वः सुवदेव कथा हर्ष शोक विवर्धन. ॥ ५ ॥ नावा**  
**न पि विष्वात्मा विदित्वा कंश जं भयो. यडु ना निजना धाना योग माया समादि शत. ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६**

उगु से न के वे टा कं शनै. देव की के छह वालिक मारे. तव विष्म की कला अनंत. जा सो कहै. जब उह सात वो गर्भ देव  
 की के चो. **॥ ७ ॥** **जाते मन मै वडो हर्ष होत भयो. और पहे लेन की सी नाई. कंश या कुं कुं मा**

होवा हि मागल कपाना. गा पग उन कर के. सो भाय भा न जो वज है. तहां तुं म जावो. नंदराय जी के गो कुल मै वसु दे  
 व की ईस्वी रो हीणी रहै है. **॥ ७ ॥ कंश के डरै. और कुं अस्त्री गुप् अस्पान मै वास करै है. ॥ ८ ॥ सो देव की के उदर मै मेरी**  
**कला शो स जी है. मेरी ही स्वरुप. तिनै निका रिके रोहिणी के उदर मै प्राप्ती करि. तुं म य सो दानंद राय जी की रानी**  
**के प्राट होऊगी. ॥ १० ॥ कै सी हो तुं म. संपूर्ण पूजादिक न की. सर्व को मना की करने वारी हो. तुं म को मनुष्य ध**

गष्ट देवी वजं भद्र गोप गोभिरलंकृतं. रोहिणी वसु देव स्य भार्या स्तेनं दगो कुले. **॥ ७ ॥ अन्पाश्रु केश सं**  
**विश्रा विवरे सुवसंति हि. देव कथा जडरे गर्भ शो धार व्यं धाम मामकं. ॥ ८ ॥ तत्सं निष्कष्य रोहिण्या उदर सं**  
**निवेशय. ॥ ९ ॥ अध्याम हं स भागे न देव कथाः पुत्रता मुने. प्राश्या मित्त्वय सोदा यो नंद पत्न्या न विष्य**  
**सि. ॥ १० ॥ अचिष्यति मनुष्या रत्वा सर्व काम वरे श्वरी. धर पा पहार वत्निभिः सर्व काम वर प्रदा. ॥ ११ ॥ ना**  
**म ध्यानि कुर्वति स्या नानि च न रा भुवि. दुर्गति भद्र कालेति विजया वैष्म वीति च. ॥ १२ ॥ कुमुदा चंडिका**  
**कृष्ण माधवी कं न्य केति च. माया नारायणी शानी शार देत्यं विकेति च. ॥ १३ ॥ श्री मुक उवाच. गर्भ**  
**संकर्षणं तं वै प्राज्ञः संकर्षणं नुवि. रामेति लो कर मणा वल नद्रं वली च्छु यात. ॥ १४ ॥ १४ ॥ १४**

पसामी ग्री करि कै भेट सामी ग्री करैगे. **॥ १४ ॥** **दृष्टी मै मनुष्य तिहो अस्पान करैगे. दुर्गा भद्र काली. विजया वैष्म वी कु**  
**मुदा चंडिका. कृष्ण माधवी. कं न्य का. माया. नारायणी. ईशाना. शारदा. अं विका. ये ते रेना म धरौ. ॥ १५ ॥ गर्भ मै**  
**तै यै पि कै निका शौगी. याते बाली सा कुं शं कर्षण कहैगे. लोक न कुं र मा मैगा. जाते या को रं म कहैगे. वली की अधिकता हो**

जिसमें कंश के विषय में  
 मी योग माया को अज्ञा होत भयो

यगी जाते वल भद्र कहैगे ॥ १४ ॥



या प्रकार जोग माया कौं जब आता दई तब कही मै ऐसे ही करुगी। या प्रकार करिकै भगवान के वचन न कुं गहे न क  
रिकै। आदरते। परिक्रमा दै। ८ पची आयकै। ऐसे रं कस्त भई। १५। वह जोग माया देव की के। उदर मै वातिक है। ता  
कुं नि काशी के। रोहीणी के उदर मै लै गई। जब परवासी यो प्रकार उठे। अब के कंश ने अपनी वह निशे धी धमका  
ई। जाते या कौं गभ गिरि पखौ। १६। विश्व के आत्मा भगवान् न त कौं जो भय। ताहि डरि करने वारो भगवान है।

स्री भगवानुवाच। संदिद्यै वं भगवता तथे त्यो मिति तद्वचः। प्रतिपद्यपरिक्रम्य गंगता ततथा करोत॥ १५॥  
गर्भे प्रणीते देव वारो हि एणं योगनिद्रया। अहो विस्वसितो गर्भे इति पौराविचक्रुः। १६॥ भगवानपि  
विश्वात्मा भगवान् नाम भयंकरः। आविवेशं सभागे न मन आनं कंड इमे। १७॥ सविभ्रत्योरु धंधाम  
नृजमानो य धारवि। १८॥ स दोति इदं धो भूतानां सव भवहः। १८॥ ततो जगत्संगल मधुतां संसमा  
हितं प्ररसते न देवा। १९॥ दधार सवी त्मक मात्मनं तं का ध्या य धानं द करं मनस्तः। १९॥ १९॥ १९॥

सोवी आपने परिपूर्ण रूप करि। वसुदेव जी के मन मै। आप आयकै प्रघट होत भये। ७॥ जब वसुदेव जी के मन मै भग  
वान आये। तब सूर्य को सोते जु। वसुदेव को होत भयो। कोउ मनुष्य जीन के समीप आवे न ही। तेज के मारे। अपमान को  
उ करि सकै न ही। ऐसे वसुदेव जी होत भये। १८॥ जाके अन्तरः। जगत कौं मर्ति मान मंगल रूप भगवान कौं रूप। वसुदेव  
जी अपने मन मै अर्पन क्यो। तब देव की जीने न ले प्रकार करिके धारण क्यो। जैसे पूर्व दिशा कौं चंद्रमा कौं धारण क

जैसे टके दीपक सौ ८ पची मै प्रकाश न ही होय। ज्ञान वंत पुरुष कौं धिया संदर न ही लगे। ऐसे सब ब्रह्मां जीन के उदर  
मै। सो ऐसे भगवान देव की के उदर मै आयकै प्राप्ती भये। तो उ कंश के वं दीषाने गैरु के है। या ते देव की संदर न ही लगी।  
२०॥ अजित भगवान् जाकी कृति मै। आपनी कृतिकरि। वावें दीषाने के धर कौं प्रकाश मान करै। सुंदर जा की मुख पानि  
ऐसी देव की कौं देखिकै। कंश यह वोल्यो। मेरे प्राण न कौं हरण वारो हरि रूपी सिह निधे। या देव की के उदर रूपी गुफा मै

सा देव की सर्व जग निवास भूतानि तरं न रेजे। जो जे द्रगे हे निशि खेवरु धा सरस्वती ज्ञान खलेय  
घासती। २०॥ तां वीर्य कंशः प्रभया जितो तरो विरोचयंती भवनं शुचि स्मिता। अहं धमे प्राहुरोह  
रिगुहां ध्रुवं श्रितो यन्नपरेयसी दृशी। २१॥ किं मद्यतस्मिन् करणीयमासु मेय दधं तं शो न विहति विक्र  
मं। त्रियाः स्वसुगुत्तम स्यावधो यं यसः श्रियं हं तनु काल मायुः। २२॥ स एव जीव नू रव लु संपरेतो  
वर्तत यो तं तनु शंसितेन। देहे मत्तं ते मनुजोः शपंति गंता तमो धतनु मानि नो ध्रुवं। २३॥

आयकै वैसो है। पहें ले या कौं तेज ऐसे न ही है। २१॥ अब मै जल दीषा के लिये कहा उपाय कतं। यह तो देव तान के  
कार्य करिके लिये आयो है। सो निश्चै मोकुं मारे गो। अब या देव की कुं मै मात तो। एक तो यह अस्त्री जाती। इस मै  
शिव है निः। तीसरे गर्भ वंती। या के मारे ते मेरो य स जाय। सो भा जाय। आरव ले घटे। २२॥ जो या संसार मै वो होत उष्ट ता करै।  
सो पुरुष नीश्वे ही जीवत मत्यो है। वाकुं मरे पीछे सब मनुष्य गारी दे है। यह पापी है। निश्चै ही न क परे गो। २३॥ २३॥



आ. ६. ६. ऐसे विचार करिके। धीरपापी जो या देव की कंवधै। ताते ऐसे सो समर्थ करे। आप ही अपन पेमै निरवर्त भयो। भागवा  
न के जन्म होय वे की वाट देखै। वेर कौं जाके हठ भागवान् तै। २४। वे ठते सो मते। ठा डे है कौं। नो जन करते। पृथ्वी में  
विचरते। इंद्रो न के ईश्वर। भागवान् ही कौं चितवन करत भयो। संपूर्ण जगत में हरि कौं देखत भयो। २५। इतने ही में  
नारदादि मुनि श्वर कौं संग लै कैं। देव की जी के शमी पत्र आवत भयो। गंधर्वादि कन सुखा। देवतान सुखा। वंसाजी  
महादेव कौं संग लै कैं। सर्व काम नान के दै नै वारे भगवान्। तिन के गर्भ ही में विराजमान है। वां नी न करिके अ

१० इति धीर तमा भावात्संनिवृतः स्वयं प्रभुः। आस्ते प्रतीहंस्तज्जन्म हरे वैरानुबंधकतः ॥ २४ ॥ आ  
सीनः संविसंतिष्ठन् संजानः पर्यटन्मही चिंतयानो हृषीकेशमपप्रपतन्मयं जगत् ॥ २५ ॥ व  
त्नामवश्यतश्चैत्यमुनिर्नारदादिभिः देवैः सानुचरैः साकं गीर्भिर्ब्रह्मणमैऽयम् ॥ २६ ॥ देवा कुचुः  
सत्पव्रतं सत्पपरं विसत्पसत्पस्योनि निहंतं च सत्ये सत्पस्य सत्पमत्त सत्पनेत्रं सत्पात्मकं त्वा  
शरणं प्रपन्नाः ॥ २७ ॥

स्तुति करत भये ॥ २४ ॥ सत्पजीन कौं संकल्पः। सत्पपरायणः। भूत भविष्यत वर्तमान। तीनों लोक न मै सो  
चे। पृथ्वी। अप। तेज। वायु। आकासः। ये जो पांच भूत तिन के कारण पंच भूत न मै रहै। कारण ता करि। पंच भू  
त न के नाश मै। आप ही वा की रहै। मनोहर जीन की वां नी। स्तानीन के प्रेरण वारे। सांचे जो तुं म। तिन की शरनि  
आय के प्राप्ती भये है ॥ २७ ॥

॥ देवता भक्तितः एकमायही जाको आवरो। तामै सुषडः लके दो जा मै फल है। सो सतोगुण। तमोगुण। रजोगुण। ताकी  
जड। धर्म मोक्ष। अर्थ। काम मोक्ष। जामै रहै। पांच इंद्रो न के जामै शान होय। और भूष। ध्यास। सोक मोह। बुद्धा  
पौ। मत्प। ये जा के स्वभाव है। त्वचा। अस्वक। मेश। मांस। अस्पी। मज्जा। शुक। ये जा के वकल है। पांच भूत। महामनः  
बुद्धि। अहंकार। काम। क्रोध। लोभ। मोह। ये जा की आठ साधा है। नो इंद्रो न के दरवाजे जामै। श्वोत्सः। प्राण। अपांन। समा  
न ध्यास। नाग। कर्म। कृकला। देवदत्तः। धनंजय। ये सब प्राण जामै पतौ वा। दे जीवः। ईश्वर। पक्षीन के रहि वे कौं घे स्त्रा

एकायनो सौ दिफल त्रिमल श्रुतरसः पंचविधः षडात्मा ॥ सपुत्त्वगष्टविठपो नवाहोदरा व्यदी  
द्विखगोत्यादि वृत्तः ॥ २८ ॥ त्वमेक एवास्पसतः प्रसृतिस्त्वमन्निधानं त्वमनुगृह्य ॥ त्वन्माय  
यासं वृत्तचेतसत्त्वापप्रपति नानाविपश्चनो यः ॥ २९ ॥ विमर्षिरुपाणववोध आत्मा स्तेमायलो  
कस्य च चरचरस्य ॥ सत्त्वोपपन्नानि सुखावहानि सतामभद्राणि मुक्ताः खलानाम् ॥ ३० ॥

है। हे राजन। ऐसे यह आदि वृत्त है। जैसे वृत्त लगे। कटे। गये। गिरै। ऐसे ईश्वर देह वीम सै नै है। २४। और  
यास सार मै उत्पत्ति पालक तुं मही है। तुं मारी मायामै भले है चित जीन के। जो पुरुष तुं म कौं ना नापकारक  
रिजानै ऐसे कहै। वंसा उत्पत्तिकरै। विष्णु या कौं पालन करै। शिवी या कौं संहार करै। ऐसे नेदन कौं जाय और  
जे विवेकी पुरुष है। जे तत्त्वो न के एक ही जानै है ॥ २९ ॥



हे कमलदललोचन॥ संपूर्णजीवनके आप्रयत्नमहीहो॥ तुम्हारेविषेविवेकीपुरुषजोहैसो॥ समाधिद्वाराचितकौला  
यकें॥ औरमहतपुरुषननैसिद्धिकस्यो॥ ऐसेजोतुम्हारेचरणारविंदरुपनौका॥ ताकौआप्रयत्नकै॥ यासंसारसमु  
द्रकोगडकेवषराकेसुरकीवरावरिकरिकें॥ उलंघनकरितीरिजायहै॥ ३०॥ हेप्रकाशक॥ जिकरणविानपुरुषहै  
ताकौआप्रयत्नकै॥ यासंसारसमुद्रकोतरिजायहै॥ तेअतिसयकरिकैतिरिवेमैआवैहै॥ महानयंकरसंसारसमु

त्त्वय्यं वृजात्ताविलसत्त्वधानि समाधिनावेशितचेतप्रौके॥ त्वत्पादपोतेमतहृत्कृतेन कुर्व  
तिगोवत्सपदं भवाब्धि॥ ३०॥ त्वयंसमुत्तीर्यमुदुस्तरं घुमन्मनवाणं वभीममदभ्रसौहृदा॥ भव  
त्पदांशोरुहनावमन्त्रतेनिधायपाताः सुदनुग्रहोभवान्॥ ३१॥ येनैरविंदाक्षविमुक्तमानिनस्त्व  
यस्तभावादविश्रुद्वयः॥ आरुह्यकृष्णपरंपदंततः पतत्यधोनादृत्युष्मदंघ्रयः॥ ३२॥

३॥ ताहिआपपारउत्तरिकै॥ मजनभावमैसंपदाय॥ यहजोजीव॥ ताकौसंसारमैराधीकै॥ आपपारकलगीजायहै॥  
तुम्हारीकपासौ॥ संतनकेउपरकपाकरोहो॥ ३॥ हेकमलदललोचन॥ जोज्ञानीपुरुषहैसो॥ अपनपेकौमुक्तिगो  
महै॥ तुम्हारीविषेभावनहीकरैहै॥ यातेअश्रुप्रजोनीकीबुझीहै॥ वेपुरुषवडेकष्टकरिकैउचेचढैहै॥ उचोवठिबौ

कहा॥ ॥३॥

सुंदरकुलमैजन्मपावैहै॥ तपकरिवो॥ सास्त्रप्रतिबौ॥ याकौपायकै॥ तुम्हारेचरणकमलकौआदरनहीकरै॥ बुहहीनीचो  
गिरिवोहै॥ विघ्ननकरिकैकष्टकौप्राप्तीहोयहै॥ छोटेकर्मनमैमनबुझीजीनकी॥ ३३॥ हेमाधव॥ जैसेज्ञानीनकौविघ्नहो  
यहै॥ औरतैसंआपकौनकौविघ्नहोयहै॥ कौनहोय॥ तुममैजीननैस्नेहवांधिराघोहै॥ तुमहीजीनकीरक्षाकरोहो॥  
जातेजवतुम्हारेनक्तनिरनयहोयकै॥ हेसमर्थविघ्ननकेमाधेपेपावधरिकै॥ निरनकैविचरैहै॥ ३४॥ पालनसमे

तथानते माधवतावकाः क्वचिद्भ्रंशंतिमार्गात्त्वयिवद्धसौहृदाः॥ त्वयाभिगुप्ताविचरंतिनिभयोविना  
यकानीकपमर्द्धसुप्रभो॥ ३४॥ सत्त्वंविश्रुदंश्रयतेभवानस्थितोशरीरिणांश्रयउपायनंवपु॥ वेदक्रि  
यायोगसपः समाधिभिस्तवार्हणं येनजनः समीहते॥ ३५॥ सत्त्वंनचेधातरिदंनिजंनवेद्विज्ञानम  
ज्ञानमिदाधमाजनं॥ गुणप्रकाशैरनुमीयतेभवान्प्रकाशतेयस्यचयेनवागुणः॥ ३६॥ ३६

संपूर्णदेहधारीनकौकरनवारो॥ ऐसेस्वरुपताहिधारनकरैहै॥ जास्वरुपकरिकैवल्लचारी॥ गुप्त्यवानप्रस्पसं  
न्यासी॥ आस्योआश्रमी॥ वेदकर्म॥ योग॥ तप॥ समाधिलगाय॥ आपकोईप्रजनकरै॥ ३५॥ हेमाधवतुम्हारे॥ सतोगुणी  
स्यामसुंदर॥ स्वरुपप्रगटनहोतोतो॥ अज्ञानकौकस्योनेद॥ ताकुंडरीकरनवारो॥ विज्ञानहै॥ सोउमहोतो॥ जाईश्वरकी  
संताते॥ जाईश्वरकौपरोभयो॥ यहवधादिक॥ गुणप्रकाशहै॥ औरजोकोईश्वरनकेगुणकौसाक्षीहै॥ ईश्वरकेप्रकाश

करिके तुमअपमानकरिवेमैआवैहो॥ ३६॥



ना. ६. ६. और या विष्णु के साक्षी तुम ही हो ॥ जातुं मारे नाम रूप ॥ गुण कर्म ॥ जन्म करि कहि वे मे नही आवै है ॥ मनः वांती द्वारा अनुमान  
करि वे मे ॥ जिन कौं स्वरूप आवै है ॥ हे प्रकाश मान है ॥ तो वी जो तुं मारे न कहै ॥ ते ध्यान में ॥ तुं मारे रूप कौं साक्षात् दर्शन  
करै है ॥ ३ ॥ तुं मारे जो मंगल रूपी नाम रूप है ॥ तिन कं कां न न तें प्रवण करै ॥ जिहा ते उच्चारन करै ॥ और न कुं प्रवण  
करवावे ॥ आपस मरन करै ॥ पूजना दिक की ध्यान में ॥ तुं मारे चरण रविंद मे ॥ जिन पुरुष एको मन लापौ है ॥ तज

न नाम रूपे गुण कर्म जन्म भि निर्लपित व्ये भवत स्प साक्षिणः ॥ मनो वचो भ्या मन मे यवर्त्तनो देव कि  
या यां प्रति यं स्प था पि हि ॥ ३ ॥ प्रष्टव नृ ग ए न सं स्मर यं प्र चिंत य न्ना मा नि रू पा णि च मं ग ला नि ते ॥  
क्रिया सु य स्त्व च्चरण रविंद यो रा विष्ट चितो न भा वा य क ल्प ते ॥ ३ ॥ दिष्टा हरे स्पा भवतः पदो नु  
वो भारो प नी त स्त व ज न्म नै शि तु ॥ दिष्ट नां कि तां त्व त्प द कौ ॥ सु शो न नै र्द र्श्या म गो धां च त बा नु कं पि तां ॥ ३ ॥

नमरन कौं नही प्राप्ती होय है ॥ ३ ॥ तुं मारे अवतार सं तुं मारे चरण रविंद करिकें ॥ या पृथ्वी कौं अवभार डुरि होय गो ॥  
धर अवव डो मंगल भयो ॥ तुं मारे सुंदर चरण रविंद कौं चिन्ह ॥ या पृथ्वी पौ प्रै गो ॥ अवतिन कौं हम दर्शन करै गे ॥ और  
आपने वैकुंठ धाम कौं जाती वेर ॥ जव स्वर्ग पै कृपा करै गे ॥ तव ता कूं हम देखै गे ॥ जव वडो मंगल होय गो ॥ ३ ॥ ३९

हे समर्थ ॥ जन्म करिकें जो रहित ॥ जो तुं मारो ॥ जातुं म कौं जन्म कौं कारन लीला वी नोद विना ॥ विचरि वे मे नही आवै हो ॥ नित्य  
मुक्त ॥ तुं मारे जो स्वरूप कौं ज्ञान नही है ॥ जाते अविद्या करि जीवन कौं ॥ जन्म मृत्यु पास्तन हो है ॥ ४० ॥ मध्य कथ वाराह नृ  
सिंह ॥ हे स ॥ राम चंद्र ॥ परम राम ॥ वामन रूप धरि कें ॥ तुं म नै जै से र ता करी ॥ और धात्री लोकी की रक्षा करै हो ॥ तै से ई अवय  
पृथ्वी कौं भार उतारो ॥ तुं म कौं वंदना है ॥ हे विष्णु आत्मने ॥ ४१ ॥ अव देवता ॥ देव की प्रतिक है है ॥ दे मा त मंगल रूपी नी हमारे

न ते भव रेपे स भव स्प कार नं वि ना वि नो दं व त त के या म हे ॥ भवो नि रो धः स्थि ति रप्य वि द्य या कृ ता य त स्त्व  
य भ या प्र या त्म नि ॥ ४० ॥ म त्स्पा श्व क च्छ प वा रा ह नृ सिं हं स रा ज न्प वि प्र वि बु धे भु क्ता व ता र ॥ त्वं पा  
सि त स्त्रि भु व नं च य था धु ने रा भा रं भु वो ह र य दू त म वं द नं ते ॥ ४१ ॥ दि ष्ठा व ते कु क्षि ग तः परः पु मा न्नि रो न रा  
क्षा भ्ग वा न्म भ वा य न ॥ मा भ न्म यं भो ज प ते मु र्खो र्गो प्रा य दू तां भ वि ता त वा त्म जः ॥ ४२ ॥ श्री प्र क उ वा  
च ॥ इ त्या नि षू य प रु ष य दू प म नि दं य था ॥ वृ क्षे शा नो पुरो धा य दे वा ॥ प्र ति य यु दि व ॥ ४३ ॥ ४३ ॥ ४३ ॥

कल्पान करि वे के लिये ॥ साक्षात् ॥ परम पुरुष भगवान् ॥ आपने परिपूर्ण करिकें ॥ तुं मारी कृति आयै है ॥ सोय हवडी  
वधाई नई ॥ अवयह कंश मरै गो ॥ याते तुं म डर पो मति ॥ तुं मारो पुत्र सं पूर्ण जादवन की रक्षा करने वारो होय गो ॥ ४४ ॥ हे राज  
न ॥ जिन कौं रूप दंत ॥ कहै वे मे नही आवै है ॥ तै सो जो परम पुरुष भगवान् ॥ तिन की या प्रकार ॥ यथा योग ॥ अस्तुति करिकें  
ब्रह्मा महादेव जी कौ अज्ञा करिकें ॥ देवता स्वर्ग कौं जात भये ॥ ४५ ॥



ना. द. ४. इति श्रीभागवते दशमोऽध्यायः ॥ २ ॥ हे राजन् ॥ अथ शब्द यहाँ मंगल मैं है ॥ जास मैं भागवान् कौ जन्म भयो ॥ ताम  
मैशो भायमान ॥ काव होत भयो ॥ जाई शर्मैं वं लाजी कौ न छत्र रोहिणी आवतौ नयो ॥ जास मैं न छत्र ॥ और प्रभु ग्रह ता  
रागण होत भयो ॥ १ ॥ शब्द दिशा प्रसन्न होति भई ॥ २ ॥ पृथ्वी मंगल रूपी नी होति भई ॥ परगाम वज ॥ आकर खांनि यन की  
श्रीकृष्ण चंद्र के जन्म के समे ॥ अमृत सो ना होति भई ॥ २ ॥ जास मैं श्रीकृष्ण कौ जन्म भयो ॥ जास मैं नंदीन के जल निर्म

इति श्रीभागवते दशमोऽध्यायः ॥ २ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अथ सर्वगुणोपेतः कालपरमसोभनः य  
ह्येवाज्जन्म जन्म हर्षांतर्गतं ग्रह तारक ॥ १ ॥ दिशाः प्रसेर्ता गन निर्मलौ दुगणोदय ॥ मही मंगल भयिष्ट  
परगाम वजाकर ॥ २ ॥ नद्याः प्रसन्न सलिला द्रुदा जल रुहः प्रियः ॥ विजालिकुल सला दस्तव का  
वन राजय ॥ ३ ॥ ववौ वायुः सुख स्पर्सः ॥ एष गंध वहः शुचिः ॥ अग्नयश्च द्विजातीनां शांतास्तत्र स  
मिधत ॥ ४ ॥ मनां स्याम म्रसन्नानि साधर नाम सुर दुहा ॥ जायमाने जने तस्मिन्ने इडं इ नयो दि

ह्येवाज्जन्म जन्म हर्षांतर्गतं ग्रह तारक ॥ १ ॥ दिशाः प्रसेर्ता गन निर्मलौ दुगणोदय ॥ मही मंगल भयिष्ट  
परगाम वजाकर ॥ २ ॥ नद्याः प्रसन्न सलिला द्रुदा जल रुहः प्रियः ॥ विजालिकुल सला दस्तव का  
वन राजय ॥ ३ ॥ ववौ वायुः सुख स्पर्सः ॥ एष गंध वहः शुचिः ॥ अग्नयश्च द्विजातीनां शांतास्तत्र स  
मिधत ॥ ४ ॥ मनां स्याम म्रसन्नानि साधर नाम सुर दुहा ॥ जायमाने जने तस्मिन्ने इडं इ नयो दि

तिकरन लगे ॥ अस रान कुं स गले कै ॥ विद्या धर न्त करन लगे ॥ वडे आने दते ॥ ४ ॥ देवता मुनि श्वरः पुष्प न की  
वर्षा करन लगे ॥ मे धमं दं दं गज न लगे ॥ १ ॥ आधी रातिके समे ॥ सर्व प्रार्थना भई ॥ तब तो देवरूपी देव की  
मैत ॥ नव के अंतर जासी भागवान् प्र घट होत भयो ॥ जैसे पृथ्वी के विषे ॥ सब दिशान में परिपूर्ण चंद्रमा उदै हो

जगुः किन्नर गंधर्वास्तपुत्रः सिद्धि चारणाः ॥ विद्या धर्म्यश्च नन्दतुरशरोभिः समंतदा ॥ १ ॥ मुमु  
चुर्मुनयो देवाः सुमना सिमुदान्विताः ॥ मंदं मंदं जल धारा जगुर्जरनुसागरं ॥ १ ॥ निशीथत मसा  
भूते जायमाने जनार्दने ॥ देवक्यां देवरूपिण्या विष्णुः सर्वगुहा शयः ॥ आविरासीद्यथा प्राच्यादि  
शी ॥ दुरिष पुष्कल ॥ ८ ॥ तम भूतं बालकं मं बुजे क्षणं चतुर्भुजं शंख गदा धुदा युधं ॥ श्रीवत्सल  
हृत्पंगल शोभि कौत्स नपीतां वरं सांप्रपथो दसौ भगं ॥ ९ ॥ महाहृदयैर्दृष्ट्य किरीटकं कुंडलाच्चिषाप  
रिष्यत् सहस्रकुंतलं ॥ उद्धमकां चंगदकं कणादिभिर्विशोचमाने वसुदेव ये क्षत ॥ १० ॥ १०

महै ॥ ४ ॥ जैसे कमल में है डह डह है ॥ जिन के नेत्र ॥ चारि जीन की भुजा ॥ संघ चक्र पद्म कौ लिये ॥ भग  
लता कौ जीन के चिन्ह ॥ कंठ के विषे सो भायमान कौत्स नमनि पीतांबर की धोवती कौ उपर नाप है रि  
स्याम सुंदर जीन कौ अंग ॥ ५ ॥ वषट्ती धरा की सी नाई ॥ वक्र मोल के जरा कुकिरि मुकर मस्तिग पै जग मगा  
त है ॥ उज्जल कुंडितन की कांतिकरि कै ॥ सो भायमान जीन के केश ॥ सुंदर वाजु बंध ॥ अमेठि माकडे  
अनेक प्रकार के गहने न करि कै प्रकाश मान है ॥ १० ॥



ना. ४. ४. ऐसे परम सोभायमान बालिक कं॥ वसुदेव जी देखत भये॥ हरि भावान् आपने खरि कौ देखि कै॥ आप्रार्थ्य कौ प्रा  
प्री होत भये॥ वसुदेव जी के उह उहे नेत्र होय गये॥ श्री कृष्ण के प्रघट होय वेकें समै हरदराय गये॥ धावें दीधाने मे  
महत्त्वहारग कुन कौ पुण्य बोलत भये॥ ११॥ बालरिका कौ पारबंल नगवान जानि कै॥ नम्र जिन के अंग॥  
प्रयुज्य जीन की बुझी॥ नम्र जिन कौ जातर लौ॥ प्रभाव के जानने वारे॥ ऐसे वसुदेव जी वा सोवरि के घर कौ॥ आ

30

१४

सविस्मयोत्फुल्ल खिलोचनो हरि सुतं विलोक्यान कडुं डभिस्तदा॥ कस्मावतारोत्सवसे  
ममोऽप्यशनुदादिजेभ्यो युतमा पुनोगवां॥ १२॥ अथैनमस्तौदवधार्यपुरुषं परं नतांगः  
कृतधीः कृतोजलिः॥ स्वरोचिषाभारतस्तिकाग्रहविरोचयंतगतभीः प्रभाववित्॥ १२॥ वसुदेव उ  
वाच॥ विदितोसि भवान् साक्षात्पुरुषः प्रकृतेः परः केवलानुभवानंदस्वरूपः सर्वबुद्धिदकः॥ १३॥  
स एव स्वप्रकृत्येदेष्टृष्टागुत्रिगुणात्मकः॥ तदनुत्वं ह्यप्रविष्टः प्रविष्ट इव भाव्यसे॥ १४॥

पने तेज करि कै प्रकाश मान करत भयो॥ ऐसे श्री कृष्ण कं ह प्रजोरि कै॥ वसुदेव जी अस्तुतिकरत भये॥  
१२॥ तुम कौ मैंने जानै॥ आप धामा धातै परै॥ साक्षात्परम पुरुष है॥ केवल अनुभवः॥ आनंद स्वरूप है॥ सं  
तु प्राणीन के साक्षी है॥ १३॥ सो तुं मः॥ आपनी माया तै परै॥ सतोगुण॥ रजोगुण॥ तमोगुण॥ रूप॥ यह विष्ट

ता समै दृष्टांत है॥ जैसे विकार कौ प्राप्ती भये॥ महत्त्वादिकः भाव जैसे॥ तैसे ईदृष्टांत कौ विस्तार है॥ महत्त्वा  
दि॥ अहंकार॥ पंचतन्मात्र ये सात॥ पांच अणु इंद्रीयः॥ पांच कर्म इंद्रीयः॥ एक मन ता कौ विष्टै॥ पांच महोत्तम भूत॥ १५॥  
यन सोलै विकारन के संग मिलि कै॥ उपजामे है॥ ब्रह्मांड कं॥ मिले क्यो न्पारे न्पारे है॥ धाते ब्रह्मांड बनाय वे मै आपस  
प्य हो॥ १६॥ और जैसे ई तुं म हो॥ रूपादिक के ज्ञान करि जानि वे मै॥ जिन कौ स्वरूप आवै है॥ औसी जे ईंद्रीयः ति  
न करि कै जानि वे मै आवै॥ विषय तिन मै आपर होवी हो॥ परंतु बीस यन के संग तुं म ग्रहण करि वे मै नही आवो हो

31

यद्येमेविकृताभावास्तथायेविकृतैसह॥ नानावीर्याः पृथाभूताविराजंजनयंति हि॥ १५॥ सन्नि  
प्रत्यममुत्पाद्यदृश्यं ते नुगता इव॥ प्रागेव विद्यमानत्वा न्नतथा मिह संभवः॥ १६॥ एवं जवान् बुद्ध्या  
नुमेयत्नक्षणे ग्राह्ये गुणे॥ सन्नपित्तदुणाग्रहः अनाहतत्वा दहिरंतरं न ते सर्वे स्पृशन्तीन् आत्म  
वस्तुनः॥ १७॥

जैसे एक डध मै॥ शब्द स्पर्श रूप॥ रस गंध॥ ये पांच वस्तु है॥ नेत्र एतै रूप ही जानि वे मै नही आवै है॥ रस कौ जा  
न नही होय है॥ ऐसे ई विषयन के ग्रहन मै॥ तिहारै ग्रहन नही हो है॥ परिछिन्न पत्ती कौ घौ सुवा मै प्रवेश हो है॥  
तुं म आप छिन्न नही हो॥ जाने वाहर भीतर भेद नही है॥ ये सांग न मै प्रवेश कहंते आयो॥ आनर्ण करि कै रहित का  
हेते हो॥ सर्व रूप हो॥ सब मै व्यापक हो॥ साचे वस्तु रूप आप हो॥ १७॥



ना. द. ४. जो पुरुषः॥ आत्मा के दृश्य देहादिक नको॥ आत्मा विना सा चे माने है॥ वह अज्ञानी है॥ विचार करिके देखै तो कथा  
न मात्र विना देहादिक सब कुछ है॥ याते फटे देहादिक नको॥ सो सा चे माने है सो अज्ञानी है॥ ७॥ हे समर्थ नरहरीः  
निर्गुण निर्विकार तुंम हो॥ तुंम ही ते या विश्व को जन्म पालन साधारण होय है॥ तुंम ईश्वर वं ला जीन मे के  
बुद्धि रोधन ही है॥ तुंमारे अग्रय लै कै॥ तीनों गुण करे॥ याते तुंम करता से क हिव मे प्रवो हो॥ १४॥ या त्रिलोकी के पाल

१५

य आत्मनो दृश्य गुणेषु सन्निति व्यवस्यते त्वव्यतिरेक तो बुधः॥ विना नुवाद न च तन्मनी धितं मम  
पतत्पत मुपाद ईत्यु मान॥ ७॥ त्वतो स्प जन्म त्ति ति संयमान विमो धं दत्पती हा द गुणा द वि क्रि  
यात्॥ त्वयी श्वरे वृत्त णितो विरु द्यते तदा श्रय त्वा द प च र्यते गुणे॥ १८॥ सत्त्वं त्रिलोक स्पित ये  
स्व मा ध्या वि न वि भु क्तं खलु वर्ण मात्मनः॥ सर्गा परं रज सो प दं हितं कृष्णं च वर्णं तम सा ज  
ना त्प ये॥ १९॥ त्वम स्प लोक स्प वि नो रिर हि भु र्ग हे व ती णो सि म मा त्वि ले श्वर॥ राज न्य सं रा मुर  
को टि र्म य पे नि र्म ह मा ना नि ह नि ष्य से च म॥ २०॥ न करि वे के लिये॥ आप नी भा या करि कै॥ आप ने स  
तो गुणी वि स्म रु प धार ण क यो हैः॥ सृष्टि करि वे के लिये तो॥ आप ने र जो गुणी वं ला कौ रु प धार न की यो हैः॥ संहार  
करि वे के लिये आप ने॥ तमो गुणी शिव रु प धार ण की यो है॥ पालन करि वे के लिये वि स्म रु प धार ण की यो है॥ २१॥  
इस म के दे वं स रि क्त स के ईश्वर॥ सं म या लोक की र ता करि वे के लिये॥ द मार ग द मे प्र ध ट न ये हो॥ स त्री जी न को ना

हे देव तान के ईश्वर॥ या दृष्ट कं शनै तुंमारे जन्म को॥ हमारे धर मे सुनिकै॥ तुंमारे व डे नै या छ ह य नै मारे है॥ जो को ई  
जाय कै कहै दे गो तो॥ स्तनिकै ह धिया र लै कै च ल्यो आवै गो॥ २१॥ अव व सु दे व जी अस्तु तिक र च के॥ त किं पि छै दे व  
की पुत्र विधे॥ नारायण के लक्षण जानिकै॥ संदर जा की मुक्कानि कं प्र के ड र ते अस्तु तिक र न लगी॥ २२॥ का कं  
प्र कार जा नि वे मे न ही आवै॥ अना दि ध्या प क जो ति रु प॥ निर्गु ण निर्वि कार॥ सत्ता मा त्र कर॥ चरणार वि द करि  
रहित॥ चे द्यार हित॥ वे द जो है॥ सा तुंमारे स्वरु प को वर्ण न करै है॥ सो तुंम ज्ञान के प्रकाशः कर न वारे॥ सा क्षा त् वि

अयं तु सभ्य स्तव जन्म नो र्ग हे श्च त्वा गु जां स्ते न्य व धी त्मुरे श्वरः॥ स ते व तारं प रु धैः समर्पितं  
श्रु त्वा धु नै वा भि स र स्य दा यु धे॥ २१॥ श्री भु क्त उ वा च॥ अ ध्ये न मा त्म जं वी ह्य म हा पु त्र ष त्त न  
ए॥ दे व की त मु णा धा व त्कं सा न्नी ता भु चि स्मि ता॥ २२॥ श्री दे व क्तु वा च॥ रु पं य त त्प्रा क्त र व  
त मा धं वृ त्त ज्यो ति र्नि गु णं निर्वि कारं॥ स ता मा त्र नि वि से यं नि री हं स त्वं सा क्षा त् वि स र ध्या  
त्म दी पः॥ २३॥ न य्ते लो के धि पर द्वा व सा ने म हा भू त्ते द्या दि भू तं ग तेषु॥ य त्कं व्य त्तं काल  
वे गे न या ते भ वा ने कः शि ष्य ते शो ष सं ज॥ २४॥

सु हो॥ २३॥ त व वं ला सो व र्ध को हो य है॥ त व स व लो क न को ना श हो य है॥ पृथ्वी॥ अप ते ज॥ वायु॥ आ का श॥ ये आ  
प के कार न तै मि ति जा य है॥ संपूर्णः प्र पंच॥ काल के वे ग करि॥ आप की भा या मे जा य मि ले है॥ ता स मे अ शो ष जि  
न को ना म॥ ये से अ के ले आप ही वा की र हो है॥ २४॥



ना. द. ४. हेमायाकेप्रेरनवारे॥ यहजो काल है॥ ताकुं तुंममारिकें लीलावरणनकरै है॥ जा काल तै यहविश्वहो यहै॥ प  
लकते तै कैं बर्षताई॥ जाकी गीनती है॥ दिपहरः राईरुपकरिकें वडो है॥ असें तुंमनिर्भय॥ स्वरूप॥ तिनकीमै  
प्रारणागति॥ अवक छुप्र घट नये होयतो॥ कछु आनंदरूपीमायापीरैगी॥ २५॥ अवय संपूर्णमनुष्य॥ मृत्यु  
रूपीसपके मारे॥ शं पूर्णलोकनमै नजेन जे डोले॥ यनको निर्भय अस्प्यानक क नही मिलै॥ कोईकपण

34

योयंकालस्तस्यतेऽव्यक्तबंधो चेष्टामा कृच्छेष्टते येन विश्वं॥ निमेषादिर्वत्सरांतो महीयांस्तत्वे  
ज्ञानं ह्येव धामपुपये॥ २५॥ मर्त्यो मृत्युव्यालभीतिः पलायनलोकानसर्वा निर्भयना ध्यायच्छ  
त॥ स्वत्पादाज्वप्रययदृच्छयाद्यस्वस्यः शोते मृत्युरस्मादपौति॥ २६॥ सत्त्वं घोरदुग्गुसेनात्म  
जान् नृणां हि त्रस्तान् मृत्युविद्यासहासि॥ हृषे च दंष्ट्रारुषं ध्यात धिक्पमाप्रत्यक्षं मां सदृशं नोः  
कधीदा॥ २७॥

२६॥

तेफलते॥ आपके चरणविंदकौ प्राप्ती कै जाय॥ तव निरभय होय कै सैन करै है॥ मृत्युका कौपी छो छो  
डिंदै॥ २८॥ और महाराज महानय करै जो स्वतप॥ उग्र सैन को वेडा॥ बिसो जो कंश॥ जाते हम डरपे है॥ सो आ  
पहमारी रक्षा करै॥ तुंम आपने नक्तन के नयके डरी करन वारे हो॥ ध्यान करि वेलायक॥ तुंमारे यह सुंर  
स्वरूपः ताकौ चरन च चकारेन कं मोहिरी खावो॥ २९॥

हेमधुसदन॥ तुंमारे जन्म मे रे कहां भयो है॥ यह मति जानो तुंमारे लीये॥ अघोर जा कौचितः अस्त्रीजातिः  
असीजो मै॥ सो वा कंशते डरपुं॥ २९॥ हे विश्वके आत्मन॥ शंखचक्रगदापद्मकी जामे सो ना॥ असें जो आपः  
यह चतुर्भुज स्वरूप॥ ताकुं अव आपछि पायले उ॥ ३०॥ जो तुंम परमपुरुष भावान॥ पलेश मै॥ विना परिश्र  
मही॥ आपने उर मै विश्वकौ राखो हो॥ सो तुंम मे रोग भंमै॥ आयकै प्राप्ती भये हो॥ धासंसार कै विषै॥ वडीहां सी होय

35

जन्मते मय्यसौ पापो माविद्या न्मधुसदन॥ समुदिजे भवद्वेतोः कंसादह मधीरधी॥ ३०॥ उपसंह  
रविश्वात्मन शेरूपमलौकिकं॥ शंखचक्रगदापद्मप्रिया जुष्टं चतुर्भुजं॥ ३१॥ विश्वं यदेतत्स्वत  
नौ निशांते यथावका संपुरुषः परो भवान्॥ विमर्त्तिसोयं ममागर्भे गोमूदहो नृलोकस्य विडं व  
नं हितं॥ ३२॥ श्री भागवानुवाच॥ त्वमेव पूर्वसर्गे नः पूष्णिः स्वायं भुवे सति॥ तदा यं सुतया ना  
नाम प्रजापतिरकल्मषः॥ ३३॥ युवां वैवस्वनादिष्टो प्रजासर्गे मदातत॥ सन्नियमिन्द्रियग्रामं तेषां  
परमं तप॥ ३४॥

गी॥ विश्वकौ आपने गर्भ मै राख्यो याते॥ ३५॥ जब श्री कल्मचंद्रक है है॥ अहो मातः॥ तुंमारे प है ले जन्मकी  
कथा सुनो॥ तुंम तो पहिले जन्म मै प्रभू ही॥ और ये वसुदेव जी पापन करिके रहित॥ सुत पाजिन कौ नामः  
असें प्रजापति भये॥ सो तुंम दोन नकुं॥ सृष्टि करि वेकै लिये॥ जब ब्रह्माजी ने अज्ञा करी॥ तव तुंम इंद्र की न कौ  
रो कि कै वडो तपक हो॥ ३६॥



ना. द. पू. पवनः वर्षा धूप जाये गरमी येते कालके गुणतिनके सहते भयेः॥ सब दारान को रोकिकें मन के मैल जिन  
के डरि होय गये॥ सखे पतो वान को॥ जिन के नो जम॥ मोते कां मनान को चाहै॥ ऐसे तुं मनै आपनो चीत प्रांतिक  
रिकें॥ मेरो आराधन कियो॥ हे भंगल लपीनी हे मात॥ तुं मनै बडो कठिन तप कियो॥ मन मो मैल गाप के अ  
से तुं म दो नून को॥ तप करत करत॥ वारे हजार वर्ष देवतान के वतीत भयेः॥ ३४ हे॥ तव निष्ठा पद के तासमे

36

वर्षे वाता तपहि म धर्म काल गुणाननु॥ सहमानो श्वसरो धविनिर्द्धत मनो मलौ॥ ३३ श्री ए  
पणी निलाहार वपरां तेन चेतसा॥ मतः कामान भी संतो महराधने मी हतुः॥ ३४ एवं वांत य  
तो नै देत पः परम डकरं॥ दिव्य वर्ष सहस्राणि द्वादसे युर्मदात्मनो॥ ३५ तदा वां परितुष्टो ह ममु  
नाव पुषान धे॥ तपसा श्रद्धया नित्यं भक्त्या च हृदि भावितः॥ प्राडरा संवर दराट्युवयोः काम दिक्षया॥ ३६

धाही देह मै॥ मै तुं मारे उपर प्रसन्न भयो॥ तुं मनै तप श्रद्धा करिकें नत्तिकरि नित्य मो क ह दे मै राख्यो॥ ध्यात क त्यो व  
र के दे ते वारे न मै जो सिरो मणि॥ ऐसे जो मै॥ मो तुं म कुं वर दे के लिये॥ आय के प्र घट हो त भयो॥ ३५ जब मै नै  
कही के वर मागो॥ तव तुं मनै यही वर मागो॥ ऐसे महाराज जो तुं म वर दे वो तो॥ तुं म सरी को ह मा रो पुत्र होयः य

॥ वष वा ज न न मा ॥ न ह ॥ चार ल रा वा ज न न ह ॥ सात म म रा मा या म ॥ सा ह त हा य क ॥ म. मु. क न मा गा ॥ ३७ ॥  
जब मै नै तुं म को यही वर दीयो॥ जावो तुं मारे पुत्र मो सारी को होय गो॥ मनोरथ जिन के प्राप्ती भये॥ ऐसे तुं म विषे न के  
नोग न ही करत भये॥ ३८ श्री ल उदारः य न गुण न करिकें॥ आपनी समान और पु रुष न देख्यो॥ तव मै पृथ्वी मे गर्भ  
याना म॥ करि विख्यात॥ तुं मारे आय के पुत्र भयो॥ ३९ दूसरे कल्प जीति॥ आदी ती माता के विषे॥ उपे प्र या ना  
म करिकें विख्यात भयो॥ वौ ना रूप धरि के वां मन भयो॥ ४० हे मात ती सरे जन्म मै॥ ता ही रूप करिकें तुं म

37

वियतां वर इत्युक्ते मादृशो वां वतः सुतः॥ अज घ ग्रा म्य विषया व न प त्यौ च दं प ती ॥ न व व्रा धि  
प व गं मि मो हितौ म म मा य या ॥ ३९ गते म यि यु वां ल व्वा व रं म त्स द सें सु तं ॥ ग्रा म्या न भो गान् ल भुं  
जा थो यु वां प्रा पु म नो र थो ॥ ४० अ द द्वा न्प त मं लो के श्री लो दार्य गुणैः समं ॥ अ हे सु तो वा म  
न वं पु श्चि ग र्भ इ ति श्रु तः ॥ ४१ त यो वां पु न रे वा ह म दि त्पा मा स क श्प पा त ॥ उपे प्र इ ति वि ख्या तो  
वा म न त्वा च्च वा म नः ॥ ४२ त ती यो स्मि न् भ वे ह वै ते नै व व पु षा यु वां ॥ जा तो भू य स्त पो रे व स त्प मे  
व्या ह त स ति ॥ ४३ ए त द्वां द र्शि तं रु पं प्रा ज न्म स्म र ण य मे ॥ ना त्प थो म भू वं ज्ञा नं म र्त्य लिं गे न ज न्म

रै फेरि आय के जन्म लीयो है॥ हे मात मेरो वचन सांचो जानि॥ देखो तो तुं मनै एक वर पुत्र को वर माग्यो॥ मै तुं मारे  
तीनी वर पुत्र भयो॥ ४१ पहि जन्म को सु मर न कर वा य वे के लिये॥ यह रूप तुं म को दी धायो है॥ और प्रकारः मनु  
ष्य के वालिक को रूप धरि के॥ जो मै प्र घट हो तो तो॥ तुं म कहा जान ते॥ यह मेरो परमेश्वर वर जन्म ले है॥ ४२



भा. द. ६. अवतुंमचाहोः पुत्रमाणिके मेरोध्यानकरोः॥ चाहेपरमेश्वरजानिके ध्यानकरोः॥ मोमेजोस्नेहकरेगेतोमेरीजोप  
मेगतिहेजाकुं पावो॥ ४३॥ ईतनीवार्ता कहिनगवान् उपकैगये॥ आपनी मायाकरिमात्तापीताकेदेधतही॥ साधर  
नवालिकहोयगये॥ ४४॥ केहेनलगेभगवान् जोतुंमकं शतेडरपोहोतो॥ मोकुं श्रीगोकुलजीमिपोहोचाय आवोः  
यसोदाजीकीकंन्याकोंधहेलेआवो॥ ऐसेजवभगवान् नेवमुदेवजीसोंकही॥ जववसदेवजी॥ सत्तकाकेधरतैः

38

२८

युवां मां पुत्रभावेन वृक्षभावेन वासकत्॥ चिंतयंतौ कृतस्नेहौ यास्येधेम हृतिपरां॥ ४३॥ श्रीशुक  
उवाच॥ इत्युक्त्वा सीधिरिस्त्वमीभगवानात्ममायया॥ पित्रोः संप्रपतोः सद्यो वभूव प्राकृतः शिशुः  
४४॥ ततश्च सौरिर्भगवत्प्रचोदितः सुतं समादाय सस्त्रिका गृहात्॥ यदावहिर्गन्तुमियेष तर्ह्यजाया  
योगमायाजनिनंदजायया॥ ४५॥ तया हूतं प्रत्यय सर्ववृत्तिमुदास्येषु पौरेषु पिश्रायिते स्वयं॥ द्वार  
स्तु सर्वाः पिहिता इत्यया ब्रह्मपाठाय सकीलं श्रवणैः॥ ४५॥ ताः कलमवाहे वसुदेव आगते स्वयं  
वर्धयथा तमोरवेः॥ ववर्ष पर्जन्य उपांशु गज्जित॥ शोचोन्वगाधारिनिवारयत् फणैः॥ ४६॥

श्रीकृष्ण कौलैकैवाहर॥ निकसीवेकी ईष्ठाभई॥ तासमैई॥ योगमायायसोदा॥ नंदरानीकैजन्मलेतिभई॥ ४५  
तायोगमायानै॥ द्वारपालनके॥ पुरवासीनकेमनहरिलीने॥ सबकुं स्वायदीने॥ तापीछे वडे वडेकीवार॥ तिनकेवि  
वैलोहकीकीलसोंकरनतै॥ मुदेऊयेजोदरवाजे॥ तेसवनकेतारेदुर्गये॥ श्रीकृष्णकौलैकैवसुदेवजी॥ गोकुलको  
जातभये॥ ४६॥

सकः आपसं आपधुलिगये॥ जैसेंस्त्रजके उदैहोतही॥ अंधकार इरिहोयजायहै॥ औरजासमै॥ मंदमंदमेघगर्जना  
करतभयो॥ शोसजीतासमै॥ वदनकीछायाते॥ निवारनकरत॥ पीछेपीछेजातभये॥ फणनतै॥ ४७॥ निरंतरइंश्रवण  
करेतासमै॥ गंभीरजाकौजलः॥ तरंगजामैउठै॥ गगउठै॥ बडेनयानकसकरानजामैभमपरै॥ ऐसेजोश्रीजमु  
नाजी॥ नगवान्केचरणछोंकै॥ श्रीवसुदेवजीकौमार्गदेतभई॥ जैसेंजानकीपतिश्रीभगवान्॥ श्रीरघुना

39

मद्योनिवर्षत्यसक्तद्यमानुजागंभीरतोयौघजवोर्मिफेनिला॥ भयानकावर्तशताकुलानदीमा  
गंदहौसिंधुरिवाश्रयः पते॥ ४७॥ नंदवृजंशौरिरुपेत्य तत्र तान् गोपान् सुसुप्तान् पलभ्यनिद्रया सु  
तंयसोदाशयनेनिधाय तत्सुतामुपादाय पुनर्गृहानगात्॥ ४८॥ देवक्याः शयनेन्यस्ववसुदेवो  
यदारिका॥ प्रतिमुच्यपदोत्तेहि मास्तेष्ववदावत॥ ४९॥

॥ ४९॥

॥ ४९॥

यजीकौसमुद्रमार्गदेतभयो॥ ४७॥ जववसुदेवजीगोकुलमैजायः देवैतो॥ प्रांष्टरणगोपनिद्रामैहै॥ तिनकौसोमतेदे  
विकै॥ श्रीकृष्णकुं॥ यसोदाजीकेपत्न्यंगपैस्वाय॥ औरउनकीकंन्याकौलैकै॥ फेरिश्रीमथुराजीकुंआवतेभये॥ ४८॥  
जवआयकेबुहकंन्यादेवकीजीकेपत्न्यंगपैस्वायदीनी॥ जववसुदेवजीवाहीआपनेअस्थानकेविषैजायके  
पावनमैवरीपहैरिलीनी॥ मानोंयहातेकऊगयेनहीहै॥ सोमतेभये॥ ४९॥



ना. ६. ६. जवनंदरायजीकीरानीजो। श्रीयसोदाजीतानेजानी। अबमेरेकछुवालिकबही। भयो। परंतुकछुडः खनभयो।  
 वालिकहोनेमें। यातेलरिकाभयोके। लरिकी। यहैकहैनलगी। निशमेमगनकछुमुदिनहीरही। ५०। इतिश्रीभा  
 तेदशमस्तुतीयोध्यायः॥ ३॥ जववाहरः नीतरकेशंद्रवाजेजोहैसो। पहैलेकीशीनाई। सबलगिरहैहै।  
 तापीछेवालिककोरुदनमुनिके। उठोढीमानसवउठे। उठिकेजलदीआयके। देवकीके। आयेगर्भकोजन्मकं

यसोदानंदपत्नीचजातंपरमबुद्धत। नतछिंगंपरिश्रातानिप्रयापातस्मृति॥ ५०। इतिश्री  
 भागवतेदशमस्तुतीयोध्यायः॥ ३॥ श्रीशुकउवाच। बहिरंतः पुरद्वारः सर्वाः पूर्ववदावता। ततो  
 बालध्वनिं श्रुत्वा गृहपालाः समुत्थिताः॥ १॥ तेतुत्तरेमुपवृज्य देवक्यागर्भजन्मतत। आचक्षु  
 र्जो जराजाययद्विनिः प्रतीक्षते॥ २॥ सतत्पात्तुर्णमुत्पायकालोयमतिविक्लः॥ स्तुतीगृह  
 मगात्तर्णप्रसवलन्मुक्तमर्द्धजः॥ ३॥ तमाहभ्रातरंदेवीकपणकरुणंसती। स्नुषेयंतवकल्पाण  
 व्रियं माहंतुमहसि॥ ४॥

सत्तेकछौ। उद्विगनजाकोमनयाहीगर्भकोपैडोदेयैहो। ५॥ यहमुनिकेवहकंशः पत्पंगपैतेउत्तरिके। वाहीसमै  
 सीधही। सोवरीकेघरकोआवतभयो। मार्गमेउपटिपत्थौ। मरतिगकेवारधुलिगये। तवदेवकीकंशकुंदेधीके। हीन  
 होयके। पतिवत्ताकरुणवानजैसै। उपजीहैकरुणजाके। तववाकंशतेवोली। हेगंगलरुप। यालरीकीकुंमा

अरेभ्रातर। अनिकौसोजीनकोतेज। ऐसेतातेनैमेरेवोहोतपुत्रमारै। परंतकहाकरै। देवनैतेरीऐसीहीबुद्धीकरि  
 दीनी। अबयालरिकीनीकुंतुछोडिदे। ५। हेसमर्थ। पुत्रजाकेमरे। ऐसीमेरीनतेरीछोटीवहैनि। मोमंदजागीनीकुंअ  
 वअंतकीपीठिपोछनी। यालरीकीकुंतुमोकुंदै। ६। ऐसेकहिवालरीकीकोछातीतैलगायके। अतिदीनकीशीनाई।  
 रुदनकरैहै। परंतुकछुदीनतोनहीहै। यहजानैहै। मैतोमेरेलरिकाअंतपोहोचायदीनोहै। परंतुयहजोमायाहै। सो

वहवोहिंसिताभ्रातः त्रिसवः पावकोपमा। त्वयादेवनिसृष्टेनपुत्रिकैकाप्रदीयतां॥ ५॥ नन्वहंतैस्वव  
 रजादीनाहृतमुताप्रभो। दातुमहसिमंदायाओमांचरमांप्रजां॥ ६॥ श्रीशुकउवाच। उपगुप्यात्मजामे  
 वरुदंत्पादीनदीनवत। आचितस्ताविनिर्मत्पहस्तादाविच्छिदेखल॥ १॥ तागृहीत्वाचरणमो  
 जोतमात्रां प्रसुः सुतां। अपोधयष्टिलाष्टेत्वाध्यान्मलितसौहृद॥ ८॥

याकेहाथलगानेकीनही। तववादेवकीकेहाथमैतेडखनै। हठतै। वहकंन्याऊरकिलीनी। नमहोयकेकही। जोवीनही  
 मानी। १। तुरतहीकीमईजोवह। वहनिकीलरीकी। ताकुंधोवीडखकोसोपिदीनी। वानैतकेपावपकरिके। सिलाकेउ  
 परदेमारतभयो। दियोतोआपनैमतलवकेलिये। नातोप्यारकछुजगीन्यो। ऐसेडखजोकेशः मनमैवडोहैगर्भजाके। ८॥



जा. ४. ५. दे. वहलरकिनीहाधमेते श्रुतीतत्कालही. वाकीमुजाउधारि. देवीकौरुपधारि. आकाशकौजातभई. अस्त्रसत्त्रिनम  
हित. आठजाकेनुजा. ऐसीजोश्रीकृष्णकीछोटीवहैनि. देविमेअई. दिव्यमालावागेनकोपहरे. चंदनकीघो  
रीजाके. दिव्यगहनेनकरिकैसोभायमान. धनुष. त्रिशूलसांगि. डाल. तरवारि. संख. चक्र. गदा. पद्म. कुलिये.  
सिद्धि. चारण. गंधर्व. अक्षर. किलर. नागनमेवडीवडीनेदीनीहैजाको. वोहोतअस्तुतिकरी. तवयहवोली १०

मातृत्वात्समुत्पत्त्यसद्योदेवांवरंगता. अदृश्यतानुजाविष्णोः सायुधाष्टमहाभुजा. दिव्य  
मंदरात्नेपरत्नाभरणभूषिता. धनुःश्रुलेषुचर्मामिसंखचक्रगदाधरा. सिद्धिचारणगंधर्वैरश  
रः किलरशेरगैः उपहतोत्तुवलिभिः स्तुयमानेदमब्रवीत्. १०. त्विमयाहतयामंदजातः विलुप्तवात  
कृत्. यत्रकवाधर्वशत्रुर्माहिंसीः कपणान्नृत्तथा. इतिप्रभाष्यतंदेवीमायाभगवतीभुवि. वक्रनाम  
निकेतेषुवक्रनामावभवह. १२.

अरेभूष. मेरेमारेतेतेरेहाधकहालग्यो. अवतरेगैभारिवेधारो. पहैलैही. तेरोवेरी. याज्ञजमै. कडांजहांतहांप्रगर  
कौचक्योहै. वेकंगाललरिकानकौहधत्तैनेवचोमारे. ११. याप्रकार. याप्रकारभगवानकीदेवीजोजोगमा  
या. कंशतैकहिकै. वोहोतजाकेनाम. कासीतैलैकै. वोहोतहैअस्यानजाके. तिनमै. दुर्गा. नप्रकाली. विजया  
अमेअनेकनामनकरिकैयाएष्वीमेविराजमानहोतिभई. १२.

जवयोगमाधाकोवचनमुनिकै. कंशकैवडोविस्मयभयो. देवकीवसुदेवकेपायनमेतेवेरीभुलवायकै. हाथजोरी  
कै. यहकहैतभयो. अहोभैना. अहोवहैनेउ. देवोतोहायहाय. मैपापीनैतुंभारेवोहोतवालिकभारे. जैसेकोउराच  
स. आपनेलरिकानकंभारैहै. १४. औरदेवोतोकरुणामेनेछोडिदीनी. जातिकेहीतकारीनकीनहीमानी सुंदर  
धर्मछोडिदीये. १०. कहौअवमैउषकोनसलोककुंजाकुंगो. ब्रह्महृत्पारेकीसीनाई. जीवतोहीमरेकीवरावरिभयो.

तयाभिहितमाकर्षकंशः परमाविस्मित. देवकीवसुदेवंचविमुच्यप्रश्रितोब्रवीत्. १३. अहोभगिन्पहो  
नाममयाकां वतपामना. एतयादृक्वापत्येवहोदिसिताः सुत. १४. सत्त्वहंत्यक्तकारुण्यत्त्वक्तता  
तिमुहत्तवल. कानलोकानवेगमिष्यामिब्रह्महेवमतः श्वसन. १५. देवमम्यन्तवक्तिनमर्त्याए  
वकेवलं. यदिप्रजादहपापः श्वसुनिः हतवान्मिष्यन्. १६. मासोचतांमहाभागावात्मजान्स्व  
कृतंभुजः. जंतवोनसहैकत्रदेवाधीनाः सहासते. १७. भविमौमानिभूतानियथायांत्पपयांतिव  
नायेमात्मातथैतेषुविपर्ययितितथैवभ. १८.

१५. औरकेवलमनुष्यही  
कहते. मोपापीनैवहैनिकेलरिकासवभारे. अहोवडभागीहो. तुंभारेमरेजोपुत्र. अवतिनकोसकमतिकरो. य  
हजीवआपनेकीयेकमेतकुंनोगवैहो. देवकेआदीनजीवहैयह. तेसदासवः शकनहीहैहै. १७. देहहैसोतोजमे  
हैऔरमरेहै. देहनकेसंगआत्मानहीजमेमरेहै. जैसेदृष्टीकेविकार. धर. सरादि. बनेहै. जयफुटिजायवह.

असोच  
भावयादेहीकोहै. १८.  
जवयहदृष्टीकेविकारदृष्टहीमरेहै.



जा. द. प्र. हे. ऐसे नही जानै है. ते पुरुष देह को. आत्मा मानै है. देह के आत्मा मानि मै ऊं. और तू दे. ऐसे भेद जानै है. जा भेद ते प  
आदिक न के. भेद संयोग वियोग भयो है. या सो अज्ञान जाय नही. १९. हे मंगल रूपी नी मै नै तु मर पुत्र मरै है. सो तु मरु  
न को सोच मति ना करौ. सब जीव. वीवेश होय है. आपने कर्म न के फल न को भोग करै है. २०. और अज्ञानी पुरुष ज  
व ताई. ऐसे कहै. मे माह ऊं. और मे माह ऊं. जब ऐसे अपन पे को मानै है. जब ताई जा देह मै. जा जीव मै. अभिमान वां

म धाने वं विदो भेदो यत आत्म विपर्यय. देह योग वियोगौ च संसृतिर्न निवर्तते. २१. तस्मात् भेदे स्वतन  
धान्म धा धा पादि तान पि. मानु सोचयतः सर्वः स्वकृतं विंदते स्वसः. २२. धाव द्र तो स्मिहं तास्मीत्या  
मानं मन्यते स्वदृक्. तावत दमि मान्यतो वाध्य बाधकता मिपात्. २३. क्षम ध्वं मम दौ रात्पं साधवो  
दीन वत्सला. इत्युक्तां प्र मुखः पादौ शपाल स्वत्वार धाग्रहीत्. २४. मोच धा मास निगडा दिश्रब्धः क  
न्यका गिरा. देव की व सुदेव च दर्शयन्तात्म सौ हं. २५.

005534

धिकै. ऐसे अज्ञानी जो पुरुष मरै मारै है. २६. अब तु म  
मेरी दुष्टता को क्षमा करौ. साधु जन है सो दीन न के उपर. क्षमा ही करै है. यह कहिकै. अप्रपात जा के नेत्र ए मै त्रि  
आयो. कंश देव की व सुदेव के चरन न मै गिरि प ह्यौ. २७. हे व ह नि. अब मेरी मार न वारो क ऊं होय बुक्यो है. यह आ  
काशवां नी को वचन मुनिकै. विद्या म ज कै आय ग यो. अमो जो कंश सो. देव की व सुदेव के पाय न मै ते वेरी कटवा

तव देव की जी. आपने भैया कंश को. वो होत सो व्याकुल देखिकै. क्षमा करि. रोस को त्यागण करती भई. और व सुदेव जी  
वीमुख्या यकै. कंश ते यह बोले. २८. हे महाभाग कंश. जैसे तु म कहौ हो. यह बात ते से ही है. देह धारी न को अज्ञानता औ  
र अहंकार. मे मेरी तेरी ऐसे भेद होय है. २९. शोक हर्ष भय द्वेष. लोभ मोह मद. यन पुरुष को ल गिरि ह्यौ है. वे पुरुष  
चोरा दिक करिकै. आप ही मरै है. उन को ईश्वर मरै. जो ईश्वर परमात्मा को न ही जानै है. नही देखै है. ऐसे कहै मे

आतुः समनु त प्रस्य चां त्वारो धं च देव की. अस्व ज द सुदेव प्रहस्य त मुवाच ह. ३०. एव मे तन्म हा  
नाग ध धाव द सि देहि नां. अज्ञान प्रभवा हं धीः स्वपरे ति भिदा यतः. ३१. शोक हर्ष भय द्वेष लोभ मोह मद  
निताः. मिथो घृति न प्रपृति भावैर्भावं पृथग् दृशः. ३२. कं स ए वं प्रसन्ना न्या विमु खं प्रति भाषितः. देव की  
व सुदेव आम्पामनु स्तातो वित्रा हं. ३३. तस्पां रात्रा व्यतीता मां कं श आ ऊ य म त्रिणः. तेभ्य आ च घृत  
सर्वं य दूक्तं योग निद्रया. ३४.

ई म ह मे ई माह. और मे ई ऊं. ऐसे अभिमान वां धिकै अपन पे को मानै है. ३५. ऐसे विचार करि. प्रसन्न कै. अथ  
जीन को मन. तव ऐसे देव की व सुदेव नै. तव कंश को आस्ता दी नी. तव बुह कंश आपने अस्थान को जात भयो.  
३६. जैसे ते से करि वा कुं रात्री व्यतीत होति भई. जब प्रातः मे कंश नै आपने मंत्री बलाये. जोग माया नै कही  
जो सब कहै त भयो. तेरो मारण हारोय हा है बुक्यो है. यह बात सव मंत्री न सो कही. हे नैया धा हि मुनौ. ३७.



ना ६८ आपनी जो स्वामी के प्रताकों वचन सुनिकें देवतान के वैरी सब को धकारिके यह बोले ॥ ववेकी नही है जीन में ॥ २९ ॥  
हे भोज वंशीन के ईश ॥ तुम्हारे मारन वारो है उम्हो तो ॥ वाकी कहा चिंत है ॥ अब एक जतन करौ ॥ पुरगामन में ॥ खिरकन में  
यन को आदिलै के जीतने अस्पान है ॥ यावज मैं ॥ दिन में दस दस ॥ दिन के ॥ पांच क्षात दीन के लरिकान को हम मारि  
आवेगो ॥ ३० ॥ यन में दी तुम्हारे मारन वारो वी आप जायगो ॥ और ए कै विषे ॥ ये डर पो कना जो ये देवता ॥ कहा पराक्रमक

आकर्षण भर्तुर्गदितं तम उर्दे वरात्रवः ॥ देवान्प्रतिकृता मर्यादैते यानि तिको विदा ॥ २९ ॥ एवं चेत्तर्हि भो  
जें पुरगाम वजा दिषु ॥ अनिर्देशगन्निर्देशां प्रहनिष्यामो धवै शिष्टम् ॥ ३० ॥ किमु धर्मैः करिष्यति देवाः  
समरभीरवः ॥ नित्यमुद्विग्नमनसो ज्पाधो धैर्धनुषस्तव ॥ ३१ ॥ अस्त तत्ते शरव्रातैर्दम्पमानाः समंततः जि  
जीविष्यवत्सृज्यपत्न्या यन परायण ॥ ३२ ॥ केचिन्प्रांजलयो भीतान्पुस्तशस्त्रादिवोकसः ॥ मुक्तकच्छशि  
त्वाः केचिन्भीताः स्मश्रुतिता दिनः ॥ ३३ ॥

रैगे ॥ तुम्हारे धनुष की टंकार सुनिकें ॥ मन जिन के कं पाय मान होयगो ॥ ३४ ॥ और धनुष मै लगाय कै वान ॥ और वान  
न की च्या ल्यो और ते मार देषिकें ॥ तव जिवे के लिये देवतारण को छोडिकें नाजि जायगो ॥ नाजि वोई उन को प्रेष है ॥  
वेल रैगे नही ॥ ३२ ॥ को ई देवता हाथ जोरिले है ॥ को ई देवता अपन पैं को दीन जानि ॥ हथियार छोडिकें नाजि जाय ॥  
को ई देवतान की कछो दी धुली जाय है ॥ को ई देवता आपत्तें ऐ सें डर पैं है ॥ यह वडो पराक्रमी है ॥ ३३ ॥

सस्त्र अस्त्रन की गतिकों भूलि गयो ॥ रथ जीन को रूटि गयो ॥ भय करि ॥ और मै ॥ मन जीन के लगि रहे ॥ संग्राम मै ॥ विमुखः  
धनुष जीन के रूटि गये ॥ युधन ही करैगे ॥ ऐ सें देवतान कुं तो तुं ममारो नही ॥ ३४ ॥ निरभय अस्पान मै प्ररवीर ॥ संग्राम  
विना ॥ और ठोर मै जो वक वाद कर ॥ ऐ सें जो देवता कहा पराक्रम करैगे ॥ तुम्हारे डर के मारे ॥ सब भीतर जाय कै देव कैगे ॥  
और कन्का ऊनै देख्यो नही ॥ ऐ सो जो बुह हरि ॥ कहा पराक्रम करैगे ॥ इत्ना हत खंडन को ॥ रहन वारो ॥ जहां पुरुष जाय ॥

नत्वं विस्मृतशस्त्रास्त्रान् विरथान् भय संनतान् ॥ हंस्यन्प्रासक्तविमुखान् भानचापानयुधतः ॥ ३५ ॥ किं  
क्षेम प्ररैर्विबुधैरसंयुगविकल्पनै ॥ रहो जुषा किं हरिणा शंभुना वा वनौकसा ॥ किमिंद्रेण त्ववीर्येण वृहणा  
वातपशपता ॥ ३५ ॥ तथापि देवाः सापत्न्यान्मोपेक्ष्य इति सन्महो ॥ ततस्तन्मूलं खनने नियुत्वा स्माननु  
वृत्तान् ॥ ३६ ॥ यथामयो गे समुपेक्षितो नृभिर्न शक्यते ह उपदश्विकि स्मिते ॥ यद्येन्द्रियगाम उपेक्षितस्त  
धारिपुर्महान् वद्धवलो न चाल्यते ॥ ३७ ॥

तव अस्त्री हो जाय ॥ ऐ सो महा देव कहा पराक्रम करैगे ॥ घोरो घोरो जा को पराक्रम ॥ तन कवि प्रति परै तो भागवान के पास  
भज्यो जाय ॥ वह ईश कहा पराक्रम करैगे ॥ वेदन के वाने वारो यह वंसा कहा पराक्रम करैगे ॥ ३५ ॥ तो उदेवतान के वै  
री है ॥ ये छोडि वेलायक नही है ॥ मन मै यह जानिके देवतान की ॥ जड उपाखि के लिये ॥ अज्ञाकारी हम है ॥ अब तुं मतिन कुं  
अज्ञा करौ ॥ ३६ ॥ जै सें देह मै रोग विनागि नै ॥ जड पकरि जाय ॥ तापी कै मनुष्य पै वा को उपाय वनै नही ॥ और वनै तो ॥ आशे है

सकै नही ॥ ३७ ॥



ना. ६. प्र. जैसे योगीजन पहिले विषयन कौ भोग करै ॥ पाछे ईश्वरीन कौ रोक्को चाहै तो ॥ फिर रुकै नही ॥ ऐसे ईश्वरीन कौ जानिके ॥  
शिव योगीन के ॥ छोड़िये नही ॥ जानै मति पीछे वह जो राखि ले ॥ जब पीछे वह डटि वे मै नही आवै है ॥ ३७ ॥ संपूर्ण देवतान  
की जड विस्म है ॥ विष्णु की जड सनातन धर्म है ॥ वेद ॥ श्रौत ग ॥ ब्राह्मण तपः ॥ दत्तानन प्रश्न ॥ जज्ञ है ॥ सो धर्म की जड  
है ॥ ३८ ॥ हे कंशता कारण ते सब प्रकार करिके ॥ पठन वारे ॥ तपः ॥ यज्ञ के करन वारे ॥ जो ब्राह्मण है ॥ तिन कौ हम मारैगे होम

२३

मूलं विस्मर्हि देवानां यत्र धर्मः सनातनः ॥ तस्य च ब्रह्मणो विप्रास्तपो यज्ञाः सदा हि ॥ ३८ ॥ तस्मात्स  
र्वीत्मनारजन् ब्राह्मणं ब्रह्मवादिनः ॥ तपस्विनो यज्ञसीतान् गार्वाहन्मोहविद्धाः ॥ ३९ ॥ विप्राणां  
यश्च वेदाश्च तपः सत्पदं समासमं ॥ श्रद्धाया तितित्ता चकत वश्वरेस्तनः ॥ ४० ॥ सहि सर्वसुराध्यतो  
द्युसुरादिगुहाशयः ॥ तन्मन्त्रादेवताः सर्वाः क्षेत्राः सचतुर्मुखाः ॥ ४१ ॥ अथैतदधोपायो दृष्टीणां विहिंसनं ॥ ४२ ॥

की प्रव्यकी ॥ पूरण करन वारी जोग उतीन कौ हम मारैगे ॥ ३९ ॥ ब्राह्मण गुरु तप वेदन कौ पठिबो ॥ सत्पवो लिबो ॥  
ईश्वरीन कौ जीतिबो ॥ संपूर्ण धर्म न मै श्रद्धा राखनी ॥ ४० ॥ संपूर्ण जीवन पै दया करनी ॥ काँकी दस वात सहा रिबो सोये  
वात हरि कौ तनु है ॥ ४१ ॥ सोये हरि सब देवतान मै मुखिया ॥ और अस्त्र न के दोही ॥ सब के अंतस्करन की जानने वारे महा  
देव ब्रह्मा सब देवतान की जड है ॥ रुधिर कौ बध ॥ यद्वा कौ उपाय है ॥ ४२ ॥

ह ॥ उष्टजा की बुद्धि ॥ काल की फासी मै बधो ॥ ऐसे जो अश्रु करंश ॥ सो उष्ट आपने मंत्रीण सहित ॥ ऐसे विचार करिके ॥  
ब्राह्मण के मारिबे तो ॥ आपनो कल्याण मानत भयो ॥ ४३ ॥ और साधन कौ कष्ट देवे मे ॥ कष्ट ही जीत कौ थारो ॥ ईश्वर पूर्व  
करुण कौ धारण करै ॥ ऐसे दांनवन कौ ॥ सब दिशान कौ पठावत भयो ॥ जब आपने घर कौ आवतो नयो कंश ॥ ४४ ॥  
रजोगुणीतमो गुणी जीन कौ खनाव ॥ अज्ञान करिके मूढ ॥ जिन कौ चित ॥ मत्सुजीन की न जीक आपलगी ॥ उन अमुर

श्रीभुक उवाच ॥ एवं दुर्मन्त्रिभिः कंसः सहस्रं मंत्रं उर्मति ॥ ब्रह्महिंसाहितं मेने कालपासावर्त्तामुर ॥ ४३ ॥  
संदिस्पसाधुलोकस्पकदनेकदनप्रियान् ॥ कामरूपधरानदिह दानवान् गृहमादिशत् ॥ ४४ ॥ ते वैरजाः प्र  
कृतयस्तमसाम् चेतसः ॥ सतां विद्वेषमाचेत रागा गतमत्सुव ॥ ४५ ॥ आपुः प्रियं यसो धर्मलोकां ना  
शिष्य एव च ॥ इति श्रियांसि सर्वाणि पुंसो महदतिक्रम ॥ ४६ ॥ इति श्रीमद्भागवते दसमे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४॥

नने साधन ते वैर भाव कीनो ॥ ४५ ॥ घडेन कौ अपराध करनो घोरो है ॥ जीन पुरुषण की आखल धरै ॥ संपत्ति जाय ॥ जस जा  
यः धर्म कौ नाश कौ जाय ॥ स्वर्गादिक लोक कौ आमीरवाद कौ ॥ और संपूर्ण कल्याण न कौ ॥ यन वातन ते नाश कौ कर  
ता है ॥ ४६ ॥ इति श्रीभागवते महापुराणे दसमे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥



ना. ६. ५. हे. उदार है चित्त जाको. ऐसे जो नंदरायजी. तब जीन के पुत्र जन्म भयो. तासमें वयो आनंद भयो. मंगल मंगल स्नान  
जिनने कियो. पवित्र होयको. संहरवत्. आभूषण पहैरि के. नंदरायजी. जोति सी जो ब्राह्मण है. तिनको बुलावत भयो.  
पुत्रको स्वास्ति वाचन पठायको. विधि पूर्वक. पित्राणको देव तानको पूजन करवावत भयो. और ब्राह्मणनको सिंगा  
र सिंगारि के. द्रौणाघाउनको संकल्प कीयो. ब्राह्मणनको दान देत भयो. नीतर रत्ननको धरि धरि के. सात पर्वत ना

श्रीशुक उवाच. नंतस्त्वत्मज उत्पन्नो जाता क्लादो महामना. आश्रय विप्रान् देवतान् स्नातः शु  
चिरत्नं कृत. १. वाचयित्वा स्वस्वयनं जातकर्म तमजस्य वै. कार्या मास विधिवत् पितृदेवार्चनं त  
था. धेनुनां नियुक्ते प्रादादि प्रेभ्यः समलं कृत. तिलाक्षीन्सपुरत्नौ घसातको भोवराहतान्. २. का  
लेन स्नानशौचाभ्यां संस्कारैस्तपसे जपया. शुश्रूषितो नैः संतुष्टा प्रव्याणात्मा तम विधया. ३.

मल उवाच. नवायको. तिनको तिनको देत भयो. ४. कल करि के. ५. ध्वी. और दिवादि. शुद्ध होय है. स्नान करे ते दे  
हादिक पवित्र होत है. धोये ते धत्तादिक शुद्ध होय है. संस्कार करे ते गर्भादिक शुद्ध होय है. तप करे ते ईश्वरी शुद्ध होत है.  
जस्त करे ते वंसादिक शुद्ध होत है. दान करे ते द्रव्य शुद्ध होत है. संतोष करे ते मन शुद्ध होय है. ज्ञान करे ते आत्मा शुद्ध होय. ३

हे. ब्राह्मण स्वस्ति वाचन पठत भये. पुराणन के वक्ता पुराणन को कहैत भये. तासमें. जगवंशवली कहैत भये. भार  
वंदी जन वडाई करत भये. गवैया गांन करत भये. मेरि नगरे वारंवार जात भये. ४. वृज मेरवाजे है. आगण है. घर है  
तिनमें वे सुंदर वही मारी धीर का वही योग्य. और वे चित्र विचित्र ध्वजा पताका. माला टाकिरी नी. वस्त्रन की पध्व  
न की वंदन वार दरवाजे पै बांधती भई. ५. गडवैल वधूरान कुं. हरदी तेल लगाय दीने. और खरी पागेरु. लगायको. मो

सो मंगल्य गिरो विप्रः सत्तमागध वंदिन. गायकाश्च जगुर्नेर्नेर्यो दुंडुभयो मुकु. ४. वृजः संमृष्ट  
संसिक्त धाराजिर गहोतरां. चित्रध्वजपताका त्रिकचैल पध्ववतोरणै. ५. गावो हवावत्सतरा हरि  
प्रतैल रुषिता. विचित्र धातु वर्दस्त्र गवस्त्रकांचन मालिन. ६. महार्ह वस्त्राभरण कंचुकोष्ठी प्रभृषि  
ता. गोपांसमाय पुराजन्तानोपायन पाणय. ७. गोप्यश्चाकर्णमुदिताय सोदापाः प्रतो नव  
आत्मानं भूषयांच कुर्वन्वाकल्यांजनादिभि. ८.

रपछि जिनके ठके. वे सुंदर कुल उपाय दीनी. और गउनको स्ववर्ण के कठला पहैराये. ८. संहरवत् आभूषण.  
पाय जा मान कुं पहैरि पहैरि के. नेटन कुं हाथ न मैलै के. संपूर्ण गोपनंदरायजी के आवत भये. ९. जसोदाजी के पुत्र  
भयो. यह मुनि के गोपन के वडो आनंद होत भयो. संहरवत् सर आभूषण पहैरि के. काजर. और टीका लगाय  
के. आपने आपने सब सिंगार करि के. ८.



ना. द. ६५. और वेनवीन केशरी की धोरि. तिनके मुखारविंद पै लगायकैं. काजर कौ टिकाल गायकैं. आप आपने सिंगार करिकै. हाथन में भेरलै लैकैं. पुष्ट जीन की कमरि. चलायमान जीन के कुच. ऐसी जो गोपिका. वेगिदै करिकैं. नंद जी के घर को जाति भई. उज्जल मणिन के जरा कुंडिल को नन में पहरे. सुंदर धुक धुकी जीन के कंठ में विराजमान चि विचित्र लहै गाफरदार. उपर सारीन कौ ओटे. और मार्ग के विषे चलिवे की हालते. केशव धन ते चमेली के पुष्प गिरत भये. हो धन के विषे हरी हरी चरी. कंकन कु पहरे है. पायन के पाय जेव की जनकार. और सुंदर मोतीन के

नव कुंकुं म किं जलक मुख पंकज भूतय. वलि निस्वरितं जगु. एषु ओषु ललकुचा. ५५. गोपा: सुमधु मणि कुंडल निष्क कंठ श्रि श्रं वरा: पद्मि सिखा चतु माल्यवर्षा. नंदालय सवलया व्र जती विरेजुर्वा लोल कुंडल पयो धरदार सोभा. १०. ता आसिष: प्रयुं जाना श्रि रं पा हित्ति वाल के हरि श चर्ण तैलाभि: सिंचं त्यो जन मुजगु. ११.

हार. हरे के उपरतिन करिकै सोभायमान. स्तन जिन के. या प्रकार करिकै नंद राय जी के घस्कं गमण करती नई. ऐसी जो मंगल छपीणी. सो मार्ग के विषे वडी सोभा कौ प्राप्ती भई. १. वे गोपिका आय आय कैं श्री कृष्ण कौ असी सदेत नई. ऐसे कहै ति भई. अहो श्री कृष्ण तुं म चिरं जीवर हो. और लाला तुं म को उदिन ताई हमारी रक्षा करौ. ऐसे वालिक के असी सदे के. हर ही चरन. ते स जल सर. आप आप समै छिरक ति भई. और श्री कृष्ण के चरित्र ए कौं गामति नई. १२.

विष्णु के रं प्रवर. अंत जीन कौ नही. ऐसे जो श्री कृष्ण नंद जी के सजमे आये ता समै. वडो उत्सव भयो. नाना प्रकार के वा जेव जत भये. १२. व्रजवासी सब: धडे प्रसन्न होयकै. दही दुध: धत जल सर. परस पर धीर कत भये. भावनन के लोटा न कौ हाथ के विषे लै लैकै. फैंकत भये. १३. उदार है चित्त जिन को. ऐसे जो नंद राय जी. स्तन जनन कौ. जगान कौ वंदी जनन कौ. और जो को रं गणी जन हेतिन कौ. गवैयान कौ. वस्त्र और आभरण पहैरावत भये. विप्रण कौं ग कुन कौं दान कर

अया धंत विचित्राणि वादि आणि महोत्सवे. कृष्णे विश्व प्रवरे नंते नंद स्पृज मागते. १२. गोपा: परस्परं हृ द्वा दधि क्षीर घृ तां वुभिः. आषिंच तो विलिपंतो नवनीतैश्च चित्तिपु. १३. नंदो महा मना स्तेभ्यो वासो लंकार गोधने. स्तन मागध वंदिभ्यो येन्ये विद्योपजीविन. १४. १५. स्तैस्तै कामै रदीनात्मा यथोचित म पूजयत्. विष्णो रा राध नार्थाय स्वपुत्र स्पौ दया यच. १६. रोहिणी च महा भागा नंद गोपानि नंदिता. व्यचर दिव्य वास: स्वक कंठा भरण भूषिता. १७.

त भये. १८. हे. उदार है चित्त जीन कौ. ऐसे जो नंद राय जी. जा जावस्तु की काम नान कौ करिकैं आये. सो सब के मनोरथ सिद्धि होत भये. जथा जो पसव कौ पूजन करत भये. काहे के लिये करत भये. केन गवान् मो पै प्रसन्न होयगे. यह जो मेरो पुत्र है. मै पो सो चीरं जीवा हो: या के लिये. १८. और तो सवरी व्रज वधू आई. परंतु रोहिणी जरन ही आई. क्यो यन के पति वसुदेव जी मधुरा मे है. जा अस्त्री कौ पति परदेस मे होय. जो अस्त्री परायें धरन ही जाय सिंगार करिकै. १९.



ना. द. म. धाकौ सात्वमेवी निषेध है ॥ जवनंदजी जायकै ॥ रोहिणी जी सो कहै ॥ अहो तुम तो बड जागिनी हो ॥ अवचलौ क्यों ना ॥ आज  
हमारे वधाई न रहे ॥ जव असे नंदजी नै कहै ॥ तव सुंदर वस्त्र न कौ पहिरै ॥ मोती न के हार ॥ सुंदर सिंगार करि कै वनि  
निकै ॥ नंदजी मण कौ आवती नई ॥ जव ते या त्रज मै श्री कृष्ण प्रघट नये ॥ जव ते नंदराय जी कौ ॥ गोकुल में पूर्ण ॥ संपति  
करि कै ॥ पूरण होत भयो ॥ हि ॥ जहां हरि नागवान ॥ नारायण प्रघट नये ॥ जव जास मै लहमी जी की डाकरि वै कौ गोकुल

तत आरभ्य नंदस्य व्रजः सर्वसमुद्रिमान् ॥ हरेर्निवासात्मगुणैरमाकीडमभूत् ॥ १७ ॥ गोपान् गोकुलर  
त्तायां निरुप्य मधुरांगतः ॥ नंदः कंसस्य वार्षिक्यं करं दार्तुकुतवहं ॥ १८ ॥ वसुदेव उपश्रुत्य भ्रातरं नंदमा  
गतं ॥ स्नात्वा दत्तकरं शशेययौ तदवमोचनं ॥ १९ ॥

सीरसा करौ ॥ असे व्रजवासी न ते कहै कै ॥ नंदराय जी कंश कौ वर सरि ना कौ जो करहै ॥ ताकुं दैव के लिये मधुरा जी कुं  
जो आवत भये ॥ १८ ॥ जवनंदराय जी आय कौ कंश कौ करदैं बुकै ॥ ताके पीछे यह बात वसुदेव जी की मुनिकै जवन  
दजी वसुदेव जी सं मिलि वै कौ आवत भये ॥ क्यौ एक गाम के वासी जातै ॥ १९ ॥

अवजै से देह में प्राण आयेतै ॥ देह उठै है ॥ असे वडे प्यारे वसुदेव जी नंद जी कुं आये देखि कै ॥ तुरत उठत भये ॥ उठि कै आप  
नी ध्याती सौ लगाय कै प्रेम सौ विकल होय कै ॥ मिलत भये ॥ २० ॥ जवनंद जी नै जाय कै वसुदेव जी की पूजा करि ॥ सख  
पूर्वक आसन पैं बैठाये ॥ कुशल प्रणि प्रणत भये ॥ और पुत्र एमै मन जी न कौ ॥ असे वसुदेव जी ॥ हे राजन ॥ वसुदेव  
जी नंद जी सौ बोले ॥ २१ ॥ अहो नै या नंद जी तुं मरै पुत्र भयो है ॥ हम यह सुनी ॥ पुत्र कै वैकी आसाऊ नही सी ॥ सो अब

तं दृष्ट्वा सहसोत्थाय देहः प्राणमिवागतं ॥ प्रीतः प्रीयतमं दोर्भ्यो सत्त्वजे प्रेमविकलः ॥ २२ ॥ पूजितः सुषमा  
सीनः दृष्ट्वा नामयमात्मनः ॥ प्रसक्तधीः स्वात्मजयोरिदमाह विसांपते ॥ २३ ॥ दिष्ट्वा भ्रातेः प्रवयसं द  
नीमप्रजस्यते ॥ पुजाशायानि व्रतस्य प्रजायत्समपद्यत ॥ २४ ॥ दिष्ट्वा न सारचक्रं स्मिन् वर्तमानः पु  
नर्भवः ॥ उपलब्धो भवानद्यत्ने मंप्रियदर्शितं ॥ २५ ॥ नैकत्र प्रियसंवासः सुहृदो चित्रकर्मणः ॥ आद्ये  
न क्वहमानानां पुवानां त्रोटसायथा ॥ २६ ॥

पाक्षि अवस्थामै तुं मरै पुत्र भयो ॥ यह वडो मंगल भयो ॥ या संसार कै विषै रहि कै ॥ पुनर्जन्म की सी नाई ॥ तुं मरौ मिला  
पभयो ॥ यह वडी वधाई नई ॥ क्यौ आपने जो प्यारे है ॥ तिन कौ दर्शन वडो दुल्लु न है ॥ २७ ॥ और प्यारे प्यारे प्यारे जीन के  
जन्मः कर्म ॥ असे आपने प्यारे मित्र है ॥ तिन कौ वासै वो एक ठोर नही होय है ॥ असे नंदीन के प्रवाह मै ॥ वह चलै जायः  
असे तिन कौ ॥ सो एक ठोर नही रहै है ॥ कोई कहै ॥ आपने प्यारे जो मित्र है ॥ तिन की प्रति प्यार लग्यो रहै ॥ २८ ॥ २५ ॥



ना. ६. ५. कश्चिदिति. कोमलमंत्रण. संबोधनं. दिनंदवो होत जलत्तणलता जाकै विवै. **अ**सोपपन्न कौ हीतकारी. महावन निरोग  
हैतहा. आपने न्यारे सुहृद न सहित वास करौ हो. या धुनिते. लरिकानकी. कुशल प्रसी. वो होत नृण जल होयगो. तव उन  
कुंग उचरैगी. उनको निरोगिलो उध होयगो. ताको जसो धारो हिणी पावन करैगी. तिनको निरोगिलो उध मेरे लरिकापीमे  
जो. २४. अहो नैयानंदज. हमारे पुत्र. आपनी माताको संगलकै. तुम्हारे वज्र मेरे है. सो तुम्हरी कौ पिता मानै है. तुम्हरी

कश्चित्परायं निरुजं भूयं वृत्त एवीरुधं. **म**हद्वनंत रधुना यत्रास्से त्वं सुहृद. २४. त्रातर्मम सु  
तः कश्चिन्मात्रा सह नवद्वजे. तातं भवंतं मन्वानो भवन्ध्यामुपलालितः. २५. पुंसां हि वर्गो विहित  
सुहृदोऽप्यनुभावितः. नत्ते मुक्तिरपमाने मुत्रिवर्गोऽप्यय कल्पते. २६. नद उवाच. अहो ते दे  
वकी पुत्राः कंशो नवहो हता. एकावशिष्टा वरजा कन्या सापि दिवंगता. २७. २८. २९.

उनको लाइन पालन करौ हो. सो वर प्रसन्न है. और यह पुरुष. अर्थ धर्म मो क्षयेती नौ परायण कुं. आपने सनेही  
ध्यारे कुं प्रांगलैकै. करै. जो आपने सनेही ध्यारेन कुं छोड़िकै. अकेलो धर्म करै प्रव्य कौ भोगै. काम विषय करै तो. ये जो वि  
वर्ग है. सो धाजीव कुं सख दाई नही होयकै. २४. जवनंद जीव सुदेव जीते कहै त भये. अहो नैयव सुदेव जी देवो तो तिहा  
रे जो देव की के पुत्र भये. सो वाकं शने वो होत मो. एक पीछली लरिकी नी. सो वी. उछटिकै. आकाश मे चली गई. ३९.

और या जीव की प्रारब्ध ही मैं. समाप्त है. जा समै पुत्रादिक न कौ है नै वारौ. प्रारब्ध ही न हो जात है. ता समै वे पुत्रादिक नही  
होय है. प्रारब्ध ही या जीव को परम कारण है. जद कव कुं पुत्रादिक वी वृष्टि जाय है. और जो फेरिक भ. आछो प्रारब्ध  
होय तो फेरि आय मिलै है. असे है नै या प्रारब्ध ही तो. सुख दुःख होय है. या प्रकार जो जानै है. वर पुरुष कर्म मो हकुं नही प्रा  
प्ती होय है. याते अहो व सुदेव जी. आपने मन मै पुत्रादिक न कौ सोच भति ना करौ. मेरे विषु रलरिकान कुं कोउ समै सोयो

नृनंद्य दृष्ट निष्ठो यम दृष्ट परमोजन. अदृष्टमात्मनस्तत्त्वं यो वेदन समुपयति. ३०. वसुदेव उवाच.  
करो वै वार्षिको दत्तो जास्ते दृष्टा वयं च व. नेह स्पेयं वृत्ति यं सत्पुत्याताश्च गोकुले. ३१. श्रीशुक उ  
वाच. इति नंद दयोजोषाः प्रोक्तास्ते शौरिणा मयु. अनो भिर नृदुष्टैस्तमनुत्ताप्य गोकुलं. ३२.  
इति श्रीभागवत महापुराणे दसमोऽध्यायः समाप्तः. ३३. ३४. ३५.

गदर्शन कै जायगो. हम ते वियोग है. ३०. अवतुं मकं शराय कौ वर सदिना कौ करै उके. अवयहां तुं भवो होत दिना मति  
रहौ. जल दीजवौ. गोकुल मै उत्पात आवैगो. या प्रकार वसुदेव जी कहिकै. फेरि नंद जी कौ आदिलैकै. सवरे गोपणा  
डान मै. बैल जोरिकै. वसुदेव जी ते अज्ञा मागिकै. अवगोकुल कौ आवत भये. ३१. इति श्री दसमोऽध्यायः समाप्तः. ३२. ३३. ३४.



ना. ६. ६. हे नंदजी मार्ग को विषे यह विचार करतः वावु देवजी को चंचन तो मिष्या नही होय है ॥ उत्पात के आयवेंते ॥ ५ ॥ रपिके ना  
 सयाण की प्रारण होत भये ॥ हे महाराज ॥ तुम नै यह तरी का दीयो है ॥ तुम ही या की रक्षा करोगे ॥ १ ॥ घोर जा को स्व रूप वाली  
 कन के भारि वैवारी ॥ वली प्रतना के शकी पठाई ॥ परगाम वजकु ॥ आदिले के लरिकान को भारती ओलै है ॥ यह बात सुनिके  
 राजा परि दत्त के मन मे संका होति भई ॥ सो ये महाराज ह प्रतना नंद के महै लमे वी गई होयगी ॥ जहां श्री प्रक देवजी कहै है  
 हे राजन ॥ चित्त भतिना करै ॥ वहां जायागी तो वही भरेगी यह कहै त भये ॥ २ ॥ हे ॥ जा अप्पान के विषे ॥ यत्ना दिकः कर्मः रा

श्री प्रक उवाच ॥ नंदः पथिव चः शौरे न मयेति विचिंतय न ॥ हरिं जगाम सरण मु ॥ त्याता गम संकि  
 त ॥ १ ॥ कंसेन प्रहिता घोर प्रतना वाल धातिनी ॥ शिष्टं श्वचार निघंती परगाम वजादिषु ॥ २ ॥ नयत्र  
 प्रवणा दीनिरहो धानि श्वकर्मसु ॥ कुर्वति मात्वतां भर्तुं यातु धान्य श्वतत्र हि ॥ ३ ॥ साखे चर्ये कदो  
 पेत्य प्रतना नंद गोकुले ॥ योषित्वा माययात्मानं प्राविशत्काम चारिणी ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ४ ॥

दस न के नाश करने वारे ॥ और जहां प्रभु की कथ प्रवण कीर्तना दिक नही होय ॥ जहां राक्षस नी प्रवति होय ॥ सो आप  
 नो पराक्रम करै है ॥ जिन के नावान के नाम सुमरन को यह नाव है ॥ तहां तो साक्षात् आप ही है ॥ प्रतना की समर्थक  
 हों ॥ सो उन को मारे ॥ ३ ॥ आकास मार्ग की वीध रने वारी ॥ इच्छा पूर्वक रूप धरने वारी ॥ ऐसी वह प्रतना माया तै  
 आपनो इस्त्री रूप बनापके ॥ अव श्री नंद राय जी के गोकुल मे जाति भई ॥ ४ ॥

005534



Diamond Book Binding House  
Moh Karachh B.H.E.L. Road Jawalapur



